चन्द्रशेखर
चित्रावली
प्रकाशक :—
श्रीआशुतोष धर
आशुतोष लाइब्रेरी
नं० ५ कालेज स्कोयार, कलकत्ता ।
प्रथम संस्करण
सन १३३३
Brojen
मूल्य ३।।। तीन रुपये बार आना ।

किशोरावस्था का स्वप्न ।

किशोरावस्था का स्वप्न ।

गङ्गातट पर बैठी हुई एक बालिका और एक बालक क्रीड़ा कर रहेथे। इन दोनों में एक का नाम प्रताप और दूसरे का शैवलिनी था। दोनों किशोर-बयस्क तथा अत्यन्त सुन्दर थे। साथ साथ दोनों दरिद्र की सन्तान थे और गरीब ही के घर में जनमे और पले थे। शैवलिनी को अपने मन में दृढ़ विश्वास था कि उसके मनोरथ प्रियतम 'प्रताप' ही के साथ उसका ब्याह होगा। किन्तु प्रताप को ऐसी धारणा न थी। इसका यह कारण था कि प्रताप को इस बात की जानकारी थी कि शैवलिनी के साथ उसका केवल माँस शोणित ही का सम्बन्ध नहीं है बल्कि वह कन्या उसके एक नजदीकी रिश्तेदार की लड़की है। किन्तु तोभी एक दूसरे को देख कर इस तरह मोहित हो जाता था कि सारी दुनिया का ख्याल भी उनके हृदय से चला जाता अथवा यों कहिये कि एक दूसरे के प्रेम में निमग्न होकर स्वयं प्रेममय होजाता। अत: सारे संसार का विस्मरण उन्हें होजाता। पक्षियों के मधुर रव, आकाश के तारे, यात्रियों की नौकाएँ—इन प्रेममय पदार्थों की सौन्दर्य्यराशि में इन युगल किशोरों के मुखड़े क्या ही अपूर्व शोभा दे रहे थे ?
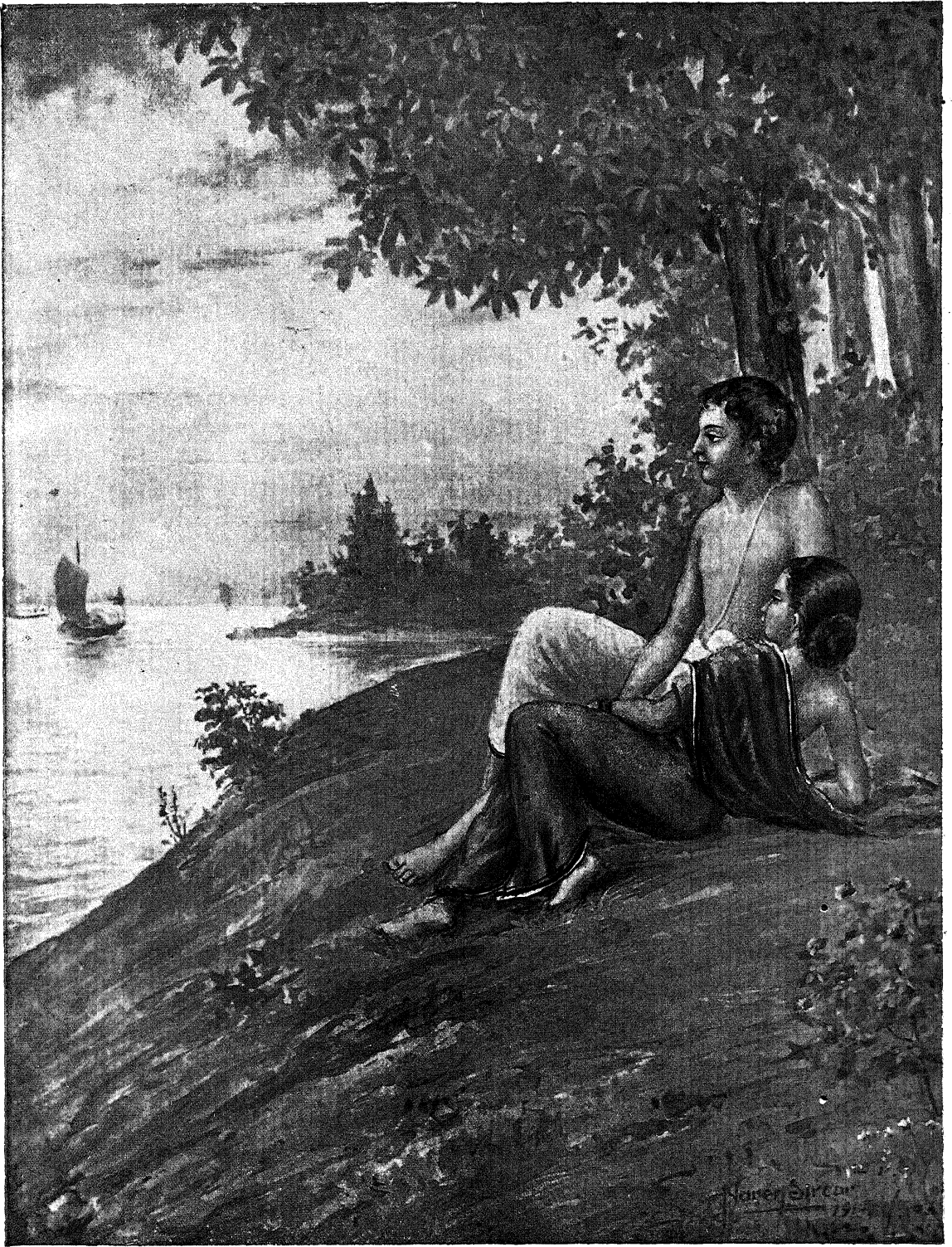
स्वप्न-भंग में ।

स्वप्न-भङ्ग में।

शैवलिनी जब कुछ बेशी उमर की हुई तब उसने अपनी भूल समझ ली। अब संसार की सारी ज्योति उसके कमल नेत्र तथा चन्द्रमुख पर प्रतिबिम्बित होने लगी। शैवलिनी ने सोचा कि प्रिय 'प्रताप' के विना इस संसार में जीवित रहना व्यर्थ है। उधर 'प्रताप' ने सोचा कि यदि शैवलिनी से मेरा वियोग होगा तो यह संसार मेरे लिये असार हो जायगा। ऐसा सोच समझ कर दोनों ने मिलकर परामर्श किया और साथ ही दोनों गङ्गा में डूब मरने को चले। प्रताप तो साहस करके डूब गया। किन्तु शैवलिनी नहीं डूब सकी। वह किनारे आकर बैठ गई। इधर डूबते हुए प्रताप को कुछ नौकारोही अत्यन्त परिश्रम करके उसे डूब मरने से बँचा कर घर वापस लाये। तब एक नौकारोही के साथ शैवालिनी का मिलाप हुआ। नौकारोही ने शैवलिनी को उसे बरने की याचना की। पीछे उस नौकारोही के साथ शैवलिनी का ब्याह हुआ। इस नौकारोही का नाम 'चन्द्रशेखर' था।
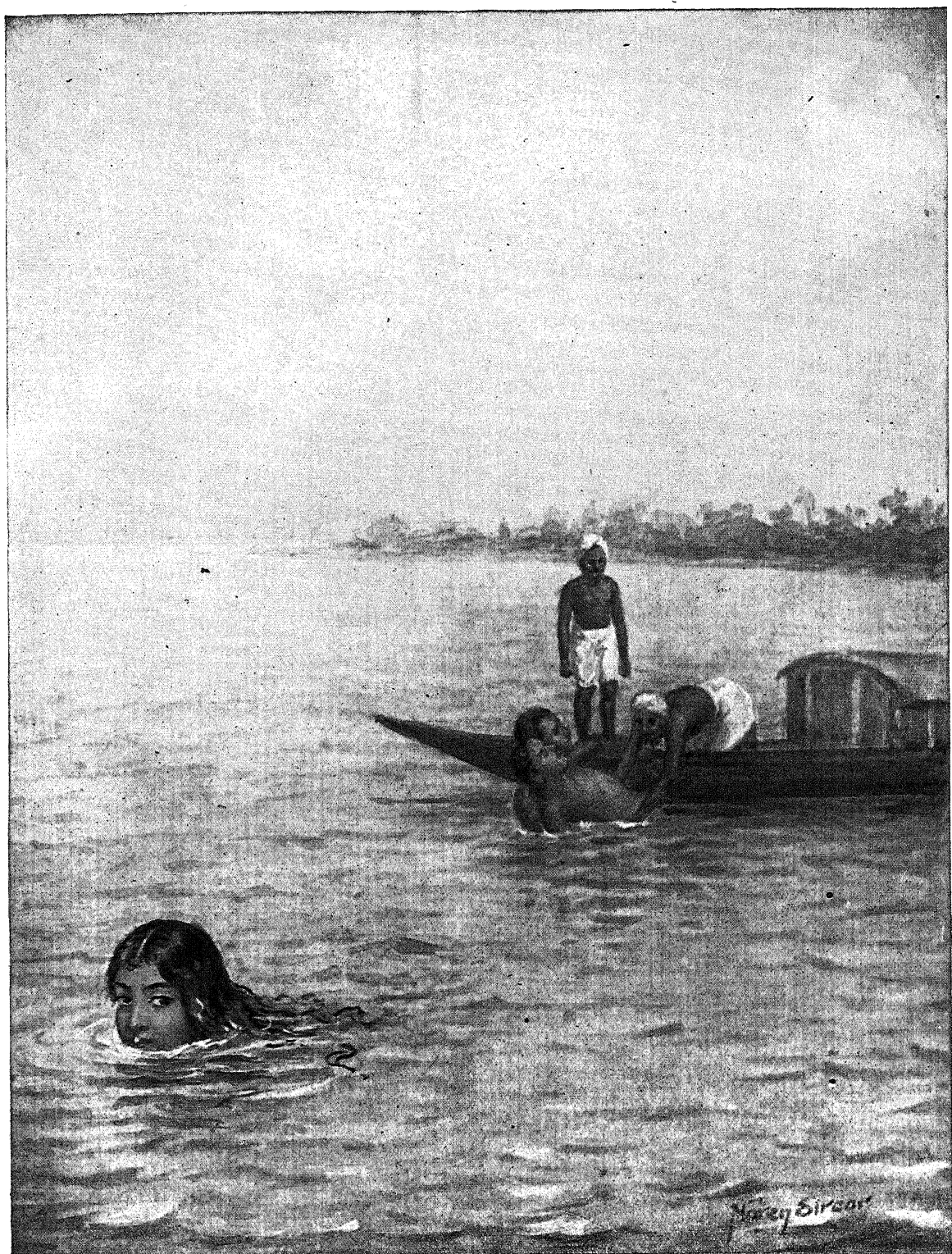
प्रीतम-वियोग ।

प्रीतम-वियोग ।

पूर्व वर्णित घटना को हुए लगभग आठ बरस बीत गये थे। उस समय 'मीरकासिम' बङ्गाल के नवाब थे। मुंगेर के क़िलेके भीतर उनका राज-महल था। एक दिन उस महल के एक सुसज्जित जंगले पर बैठी हुई उनकी प्रियतमा 'दलनी' बेगम अत्यन्त चिन्तित तथा उत्कण्ठित भाव से अपने प्रियतम के शुभागमन की प्रतीक्षा कर रही थी। मन ही मन वह इस भावना में मग्न थी कि वह क्योंकर शीघ्र आवेंगे ?

मुग्धा दलनी ।

मुग्धा दलनी ।

दलनी को जब कुछ भी नहीं सुहाताथा तब वह हाथमें वीणा लेकर धीरे धीरे मधुर गान करने लगी। इसी समय नवाब एक ब एक आ उपस्थित हुए। जब आराम से बैठ चुके तब वह बोले "प्यारी दलनी! कौन सा गाना गारही थी? एक दफे और गाओ, सुन भी तो लूँ।" दलनी लाज के मारे मानों मर गई। ऐसी हालत में जब उसके प्राण के तार चञ्चल हो उठे तब गाना भी बेसुरा होगया। दलनी ने तब वीणा को छोड़ कर सारङ्गी लेली। किन्तु उससे भी साफ साफ शब्द नहीं निकलता था। दलनी पीछे खिसला कर बोली "नहीं, इससे मेरा काम नहीं चलेगा। कलकत्ते में अङ्गरेज लोग जो बाजा बजाते हैं मुझको वही चाहिये।"

किन्तु उस समय नवाब और अङ्गरेजों के बीच लड़ाई छिड़ चुकी थी। अतः अङ्गरेजों से बाजा लेने की सामर्थ्य अब नवाब साहब में नहीं रही। नवाब ने दलनी बेगम को यह बात भलीभाँति समझा दी। जब दलनीने यह सुना तब बाजा प्राप्त करने का आग्रह उसने छोड़ा। वह अपने प्रिय नवाब की भलाई के लिये उत्कण्ठित हो उठी।

दक्षिनी की भिक्षा।

दलनी की भिक्षा ।

दलनी ने लाख कोशिश की कि नवाब को अङ्गरेजों के साथ विरोध करने से निवृत्त करूं किन्तु जब उन्होंने देखा कि इसका कुछ भी फल नहीं होता तब उन्होंने कातर स्वर से यह भिक्षा मांगी।

"हे प्रियतम ! जब आपने लड़ाई करने का दृढ़ संकल्प किया तब मेरी एक एक बात मान जाइये। मैं आँचर पसार के आप से यह भिक्षा मांगती हूं कि युद्धक्षेत्र में जब आप जाइये तब मुझे भी साथ लिये जाइये। कहिये, मुझे निराश तो नहीं कीजियेगा।" किन्तु नवाब ने पहले उस बात को हँसी दिल्लगी में उड़ा दिया। इसके बाद दलनी ने पूछा "आप तो गणित विद्या खूब जानते हैं। कहिये, युद्ध समय में मैं कहाँ रहूंगी ?"

यह सुनकर नवाब गणना करने बैठे। कुछ देर के बाद वह एकाएक भयभीत होकर रोमाञ्चित हो बोल उठे "यह क्या ! दलनी तब कहाँ रहेगी ! नवाब के ज्योतिष शिक्षा-गुरु हमारे चरित्र नायक 'चन्द्रशेखर' थे। वही शैवलिनी के स्वामी थे। नवाब ने तभी चन्द्रशेखर को तुरत हाजिर करने का हुक्म दिया।

फष्टर दर्शन ।

फष्टर दर्शन।

अभी चन्द्रशेखर की क्या अवस्था है ? उस घटना को हुए बहुत दिन बीत गये जब शैवलिनी को प्रताप-वृन्तच्युत करके उसने स्वयं गले लगाया है। किन्तु हाय ! शैवलिनी रूपी फूल में एक ऐसा दुस्तर कीड़ा छिपा है यह बात वह नहीं जानते थे। जो कीट प्रताप-वृन्त को पा जाने पर बिना किसी अड़चन से अदृश्य होजाता, वही प्रताप-वृन्त से च्युत शैवलिनी के प्रति भयानक रूप धारण करने लगा। साथ साथ वह चन्द्रशेखर के गले में निठुर भाव से घाव करने की चेष्टा करने लगा। यद्यपि शैवलिनी चन्द्रशेखर की गृहलक्ष्मी हुई थी सही, किन्तु उसका मन कहीं अन्यत्र खिंचा था। अतः एक दिन शैवलिनी तथा उसकी दूर सम्बन्धी ननद, 'सुन्दरी' जब सघन जङ्गल से वेष्ठित 'भीमा' नामक तालाव में स्नान कर रह थीं तब साँझके अंधेरे में तालाव के दूसरे किनारे पर नीलकोठी के 'फष्टर' साहेब को नीचे उतरते देखा। उसे देखते ही सुन्दरी दौड़के भाग गई। शैवलिनी नहीं भागी। वह जल में आधी देह डुबोकर खड़ी रही।
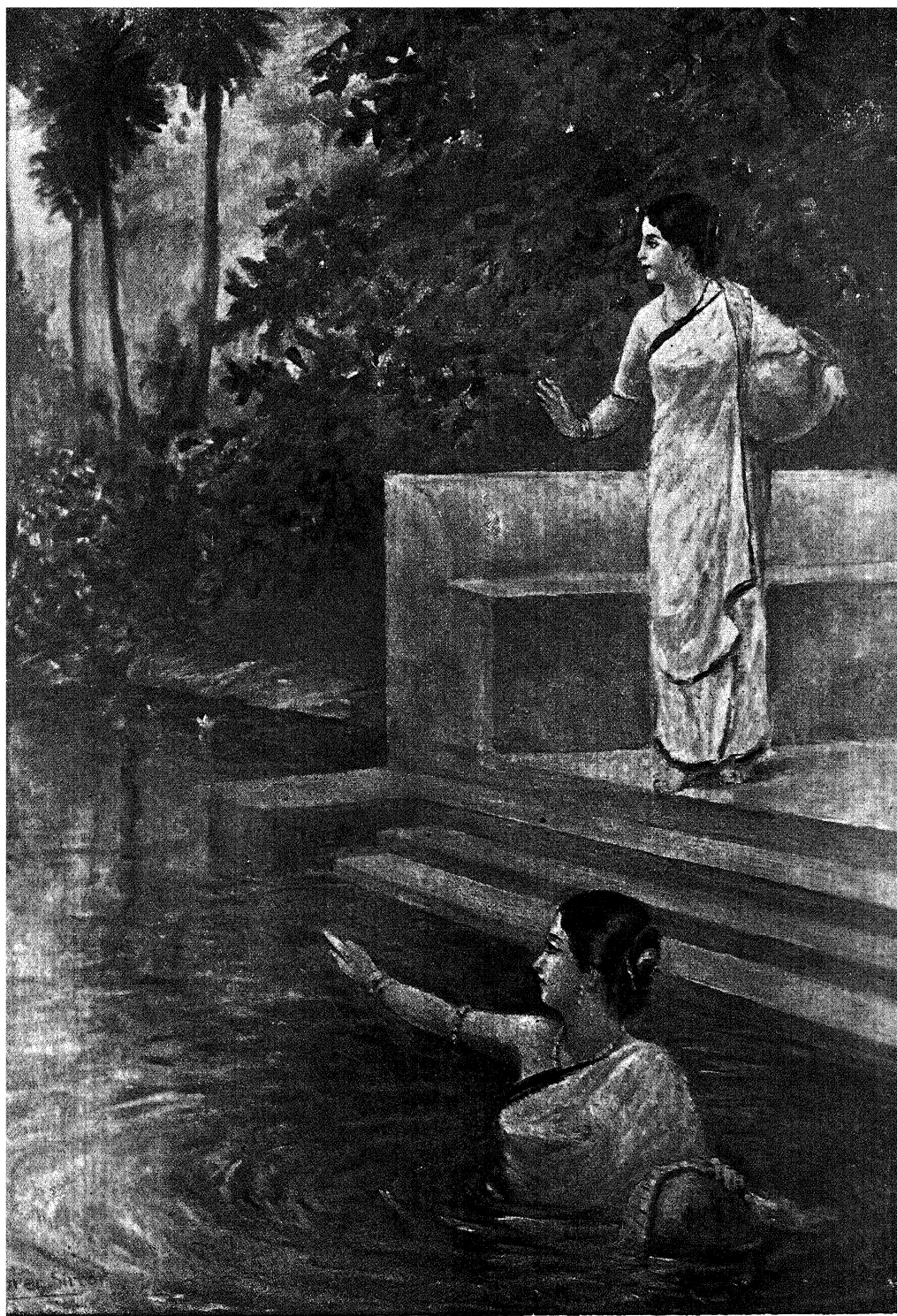
फष्टर सम्भाषण ।

फष्टर-सम्भाषण ।

शैवलिनी की सौन्दर्यरूपी लहर में फष्टर साहेब की मेम 'मेरी'के रूपका क्रमश: तिरोभाव होने लगा। फष्टर इस सुयोग को हाथ से जाने देने को राजी नहीं हुआ। सुन्दरी भाग चली, यह देखकर वह धीरे धीरे शैवलिनी के समीप आया। मालूम होता है इससे पहले भी फष्टर और शैवलिनीकी मुलाकात हुई थी। अत: आते ही पूर्व परिचित की भाँति 'फष्टर' अंगरेजी में बोला जिसका भावार्थ यह था "बीबी ! मैं फिर हाजिर हूं।" शैवलिनी न अङ्गरेजी समझतीथी और न साहेब बङ्गला यही सुअवसर पाकर शैवलिनी अपने मन का दाह मिटाने को फष्टर को गालियाँ देने लगी। साहेब के मन में जो भाव था वह उसके हावभाव से ही शैवलिनी खूब समझती थी। तोभी किसी बहाने से जो शैवलिनी साहेब को दर्शन देती या उससे इङ्गित द्वारा अपना भाव प्रगट करती वह केवल प्रताप जैसे हृदयेश्वर प्रीतम के नहीं पाने के विषाद के कारण से था। दुर्भाग्य के प्रति विरक्त होकर मनुष्य जैसे विष भी खालेता है शैवलिनी भी उसी कारण से फष्टर जैसे नीच यवन के ऊपर भी अपना प्रेम न्योंछावर करने से बाज नहीं आई।
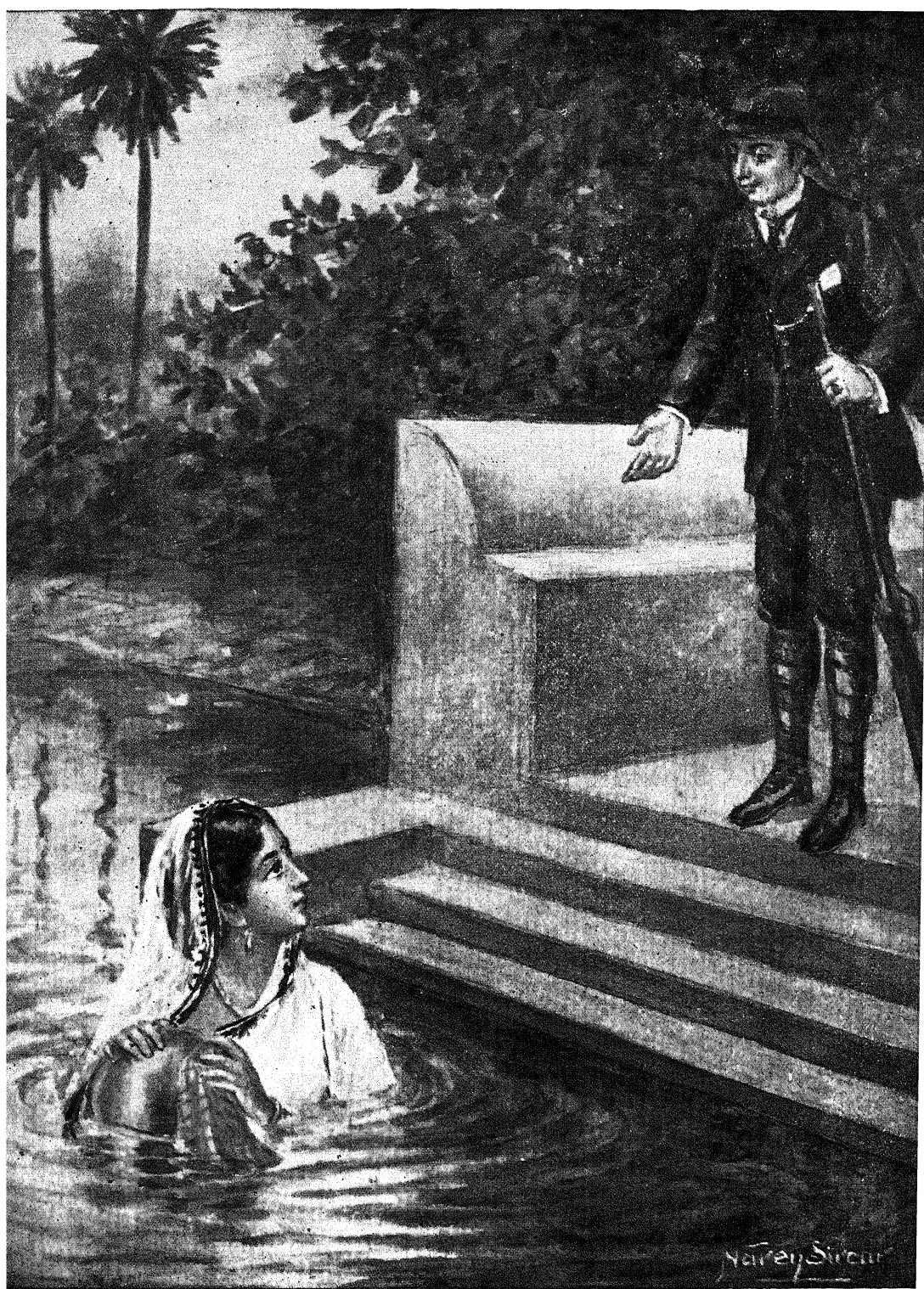
स्वामी-स्त्री ।

स्वामी-स्त्री ।

गाली सुनकर फष्टर उसी दिन की तरह रवाना हुआ। शैवलिनी भी पानी से बाहर निकल कर घर आई। उस समय चन्द्रशेखर दिया बाल कर गूढ़ पाठ के अध्ययन में निमग्न थे। शैवलिनी देर करके आई इस बात को वह नहीं लख सके। शैवलिनी, स्वामी गाली जरूर देंगे ऐसा समझ कर, उसे सहने के लिये तैयार थी। अब वह चन्द्रशेखर के सामने आकर मुसकराके बोली "मैं इतनी देर करके आई हूं, तुमने तो इसलिये कुछ भी नहीं कहा !" यह सुन कर चन्द्रशेखर का मन इस ओर आकृष्ट हुआ। अब उनने देर होने का कारण पूछा। शैवलिनी ने सारा दोष सुन्दरी के मत्थे मढ़ा। शैवलिनी ने करे "गोरे सिपाही को देख कर सुन्दरी भाग आई। मैं तब क्या करती ? डरके मारे पानी में डूब गई। साँस लेने के लिये केवल नाक उगाई हुई थी। जब मुसीबत टल गई तब मैं आई हूं।" चन्द्रशेखर ने तब शैवलिनी को फिर ऐसा न करो इस बात की मनाही देनेके मतलब से अन्यमनस्क रहने के कारण धोखे से कह डाला "फिर आना नहीं।"

चन्द्रशेखर ।

चन्द्रशेखर ।

चन्द्रशेखर अति महान् व्यक्ति तथा सुपुरुष थे। चन्द्रशेखर (शिवजी) की भाँति वह भी तेजवान् सुन्दर तथा उदार चरित्रके थे। उस समय देश भर में उनके समान शास्त्रज्ञभी दूसरा कोई नहीं था। किन्तु इन सव गुणोंके कारण शैवलिनी के संकीर्ण हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा अथवा यों कहिये कि इन सब से वह कुछ भी आकृष्ट नहीं हुई। शैवलिनी के साथ ब्याह करके संसार से विरक्त चन्द्रशेखर को जो भ्रम हुआ था उसे वह धीरे धीरे समझ रहे थे। इसी हेतु आज दो पहर रात के समय चन्द्रकिरण से उज्वल पलङ्ग पर गाढ़ी नींद में सोई हुई शैवलिनी को देखकर उनकी आँखों में आँसू भर आया। हाय! बिना बूझे वह कैसे भारी भ्रम में पड़े। पुस्तकों के कीड़े तथा शास्त्रज्ञान में निपुण एक भिक्षुक ब्राह्मण के उपयुक्त क्या यह रूपखानि शैवलिनी कभी हो सकती ? इसके अतिरिक्त ब्राह्मण देवता की उमर भी जैसी थी उससे क्या प्रौढ़ वयस्का शैवलिनी को कभी तृप्ति हो सकती थी ?
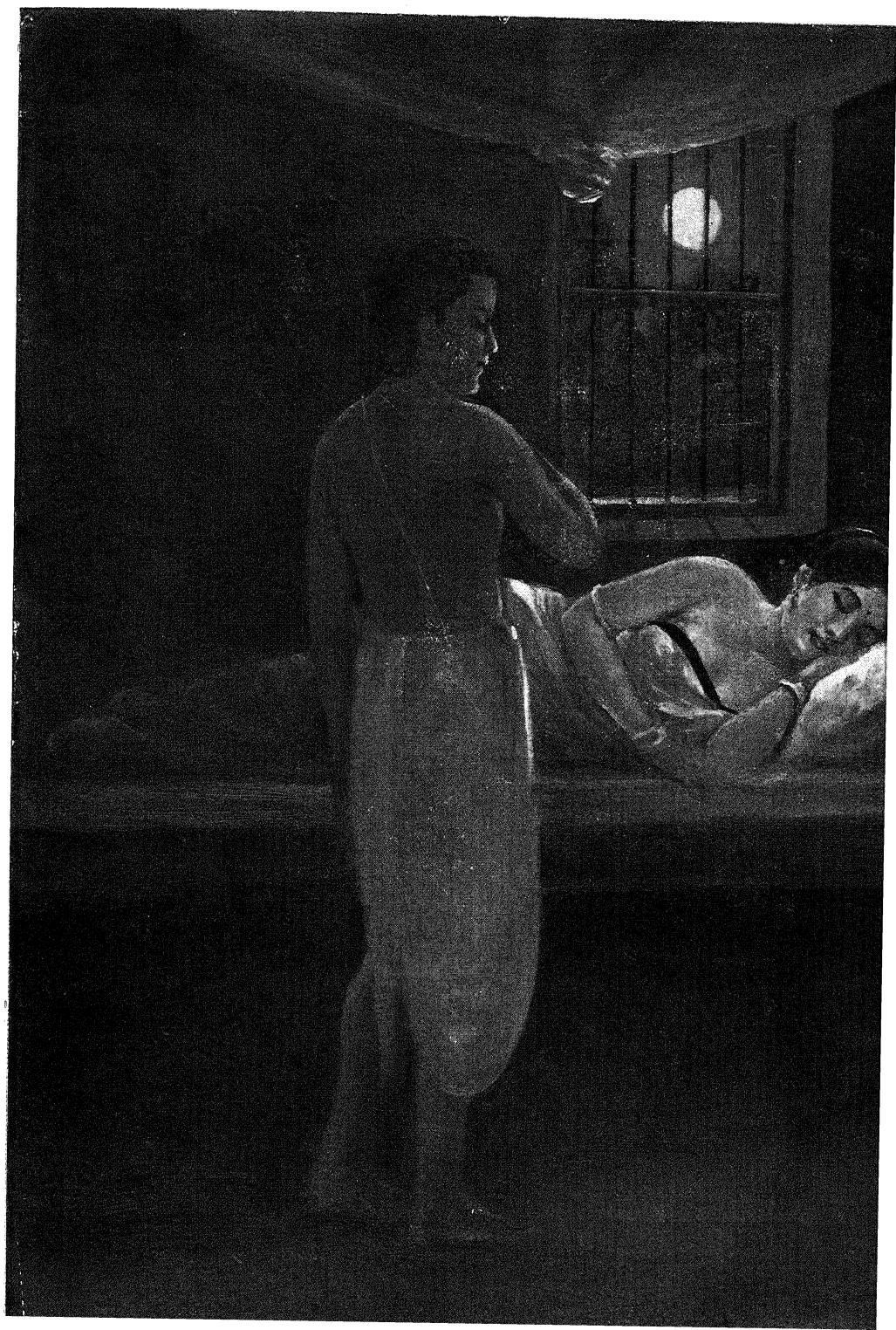
नीलकर का प्रताप ।

नीलकर का प्रताप ।

जिस दिन यह घटना हुई थी उसके दूसरे ही दिन नवाब के यहाँ से चन्द्रशेखर को हुक्म मिला कि वह रुक्का पाते ही नवाब के यहाँ हाजिर हों। यह सुनते ही उनने मुंगेर की यात्रा की। हाय! दैवलीला अपार है। उसी समय फष्टर को कलकत्ते जानेका हुक्म आया। फष्टर उदास हुआ। शैवलिनी का रूप फष्टर के हृदय में कूट कूट कर भरा था। उस हृदयेश्वरी को जनम भरके लिये त्याग कर चला जाना फष्टर के लिये दुस्तर काम था। आखिर को फष्टर ने एक तरकीव निकाली।

उस समय के निलहा साहेवों का जैसा प्रचण्ड प्रताप वङ्गाल में था वह सभी जानते थे। फष्टर ने चन्द्रशेखर की अनुपस्थिति का सुयोग पाकर उनके घर में डाका दिया। ग्रामवासियों ने देखा कि बहुत रात बीत जाने पर बन्दूक की आवाज से लोगोंको भयभीत करते हुए डाकू लोग अनगनित मसाल हाथ में लिये अपना काम कर रहे हैं। इसी बीच में पुरन्दरपुरका साहब एक पालकी लिवाये कोठी की तरफ जा रहे हैं। पीछे, पता लगाने से मालूम हुआ कि चन्द्रशेखर का घर शैवलिनी से शून्य होगया।

वज्राघात ।

वज्राघात ।

घर को लौटे हुए परदेशी के मन में कितना सुख कितनी आशा आशङ्काएँ रहती हैं ? जिस घर में उसकी स्त्री रहती है, पुत्र, माता, पिता आदि सम्बन्धी रहते हैं उस घरके प्रति किसका मन आकृष्ट नहीं रहता होगा ? चन्द्रशेखर का माता, पिता या लड़कावाला कोई नहीं था ! किन्तु लक्ष्मीरूपा उसकी गृहलक्ष्मी ही सब अभावों की पूर्त्ति करती थी। अत: राजधानी से लौटते समय शैवलिनी का ख्याल मन में रखकर चन्द्रशेखर चञ्चल और उद्विग्न हो उठे। शैवलिनी उनकी कौन थी ? सर्वस्व ! यदि घर लौटने पर उस अनुपम सुन्दरी का सौम्य दर्शन कर पाते तो क्या रास्ते की थकावट कुछ भी मालूम पड़ती ? किन्तु जब शैवलिनी को नहीं देख पाये तब उनका मानों सर्वनाश हो गया।

हाय ! यह किसने सोचा समझा था कि यह आकस्मिक घटना चन्द्रशेखर को ही विपत्ति में डालेगी ? उन्हीं की सोने की चिड़िया उड़ाई जायगी। जिन संसार त्यागी महापुरुष ने दो दिन पहले अपनी प्रियतमा में लिप्त न रहकर अपनी शास्त्र चिन्ता को जरा भी नहीं छोड़ा वही आज शैवलिनी के वियोग में अपना सभी ज्ञानभण्डार पुस्तकों को 'अग्नये स्वाहा' करने से ज़रा भी नहीं हिचके। वेदज्ञान, उपनिषद, दर्शन शास्त्र, जो चन्द्रशेखर को अपने प्राण से भी प्रिय हो रहे थे, वही आज खाक में मिल गये। हा दैव ! तुम्हारी गति निराली है।

सुन्दरी का वीरत्व ।

सुन्दरी का वीरत्व ।

शैवलिनी की ननद, सुन्दरी एक मामूली सीधी सादी औरत नहीं थी। अपने स्वामी के साथ राय करके उसने एक ऐसा फंदा सोच निकाला कि शैवलिनी को फष्टर साहेब की नाव से चुपके से चोरी करके निकाल ले। शैवलिनो जिस नाव पर असवार थी वह एक दिन गङ्गा के किनारे लङ्गड़ डाले खड़ी थी। सुन्दरी इसी मौके पर एक नाइन का भेष बनाकर उस नाव में जाघुसी। सुन्दरी लम्बी घूंघट लटकाई थी। कुछ देर के बाद जब शैवलिनी को उसने घूंघट उठाकर अपना असल परिचय दिया तब वह बोल उठी "ऐ सुन्दरी! बड़ी विपत्ति है! तू यहाँ क्योंकर आई?" सुन्दरी बोली "भागो, भागो। यह मेरा पोषाक पहन लो। मेरे लिये चिन्ता मत करो। अङ्गरेजों के पल्टन में ऐसा वीर कोई नहीं है जो मुझे पकड़ के रख सके।"

एक दिन वही सुन्दरी फष्टर को देखते ही शैवलिनी को घाट ही पर छोड़ के भाग चली थी किन्तु आज वही मानों फष्टर के पेट के भीतर पैठके ऐसा साहस पूर्ण बातें बोलने में तनिक भी नहीं डरती। स्त्रियाँ साधारणत: अबला ज़रूर होती हैं किन्तु प्रेम की मर्य्यादा तथा सतीत्व की रक्षा करने के लिये वे लोग अनुपम वीरत्व दिखाने से बाज़ नहीं आतीं।

सुन्दरी का आशीर्वाद ।

सुन्दरी का आशीर्वाद ।

शैवलिनी अपनी राय से भी फष्टर के साथ गई थी यह बात सुन्दरी नहीं जानती थी। उसे यह धारणा वनी थी कि फष्टर बलात्कार उसे ले गया है। उसी मिथ्या विश्वास के कारण उसने साहस कर उसे छुड़ाने की चेष्टा की थी। किन्तु हाय! शैवलिनी एकाएक ऐसा भयङ्कर विष पी डालेगी यह बात कौन अनुभव कर सकता था? सुन्दरी ने अब शैवलिनी को काले साँप से भी भयङ्कर जीव समझा और हट के दूर खड़ी हुई। बाद इसके उसे जल्दी मर जाने का शाप देकर अपनी नाव पर चढ़के नौ दो ग्यारह होगई। स्वामी के पास जाकर सुन्दरी केवल कुल-कलङ्किनी शैवलिनी के प्रति सारी राह गाली बकती गई। किन्तु सुन्दरी को बात पहले ही समझना उचित था। यह सीधी बात है कि शैवलिनी के स्वामी यदि उसे कुछ भी आकृष्ट कर सकते तो फष्टर का क्या मजाल था कि इतनी आसानी से उसे उड़ाले जाते? फष्टर यद्यपि शैवलिनी को डाका देकर ले गया था ज़रूर, किन्तु इस में शैवलिनी का भी इशारा था। वह मुख्यतया इसी आशा से आकृष्ट होकर निकली थी कि घर से बाहर होने पर कहीं न कहीं प्रताप मिलही जायगा। उसी आशा से जिस दिन चन्द्रशेखर के घर में डाका पड़ा था उस दिन शैवलिनी ने छुटकारा पाने की विशेष चेष्टा न की। क्या इस दिगन्तव्यापी संसार में किसी की सामर्थ है कि पतिव्रता हिन्दू रमणी को काबू कर सके? उसी पापपूर्ण लोभ के कारण आज शैवलिनी ने सुन्दरी के अदम्य साहस द्वारा प्राप्त हुए छुटकारा पाने के सुलभ द्वार को भी अपने ही हाथसे बन्द किया। अरी दुष्टा शैवलिनी! तूने हिन्दूनारी जाति मात्र पर कलङ्कका धव्वा लगाया।

भाई बहिन ।

भाई बहिन ।

अङ्गरेजों के साथ नवाब की लड़ाई छिड़ ही गई यह देखकर दलनी को बड़ा डर हुआ। दलनी को इस बातका दृढ़ विश्वास था कि अंगरेजों के साथ युद्ध करने में किसी को भलाई नहीं हो सकती। अत: दलनी ने अपनी क्षुद्र बुद्धि से उस विरोध को शान्ति करने की चेष्टा की। किन्तु इसका क्या उपाय था? क्या नवाब उसकी बात को मान लेंगे? दलनी ने मन में सोचा कि गुरगनखाँ यदि चाहेगा तो इस बिरोध को मिटा सकेगा। खासकर इसके अन्दर यह बात थी कि इसी गुरगन खाँ ने इस विरोध की नींव डाली थी। अत: दलनी गुरगनखाँ के साथ दो पहर रात को एकान्त में मिलने गई। यह गुरगन खाँ राज्य के सेनापति तथा दलनी के भाई थे। दलनी यद्यपि नवाब की बेगम थी तोभी उसने इस तरह के कार्य में हस्तक्षेप करना उचित समझा। दलनी ने अपने भाई से इस समराग्नि को बुताने कहा किन्तु भाई ने एक भी नहीं सुनी। किन्तु इधर खाँ साहेव अंगरेजों को हराकर स्वयं नवाब होने का सुख-स्वप्न देख रहे थे। अत: दलनी के अनुरोध को भी उसने लात मारी। उसके ज़िद्द को समझ कर दलनी क्रोध पूर्वक अपने आसन से उठ खड़ी हुई और बोली "तुम्हारा नाश हो। नवाब मेरे स्वामी हैं। उन्हीं की मंगल कामना से आज से इस क़िले के भीतर मेरी तेरी शत्रुता रही।"

निराश्रय ।

निराश्रय।

दलनी क्रोध करके जल्दी से उस कमरे से उठके चली गई। गुरगन खाँ ने उसे अपनी भावी विपत्ति का मूल समझ कर क़िलेका दरवाज़ा बन्द कर दलनी के उसमें पैठने का रास्ता बन्द कर दिया। दलनी ने अकेली केवल एक दासी के साथ उतनी रात को मुंगेर क़िले में पहुँच कर सुना कि उसके पैठने का दरवाजा बन्द किया गया है। दलनी कटेहुए केलेके वृक्ष की भाँति मिट्टी पर बैठ के करुणापूर्ण शब्दों में बोल उठी "हाय! मेरे भाई ने मेरे ठहरनेका भी ठिकाना नहीं रक्खा। क़िले का प्रहरी यह स्वप्न में भी नहीं जानता कि यह नवाब साहब की प्यारी बेगम है। दलनी भी उसे अपना परिचय देने का साहस नहीं कर सकी।
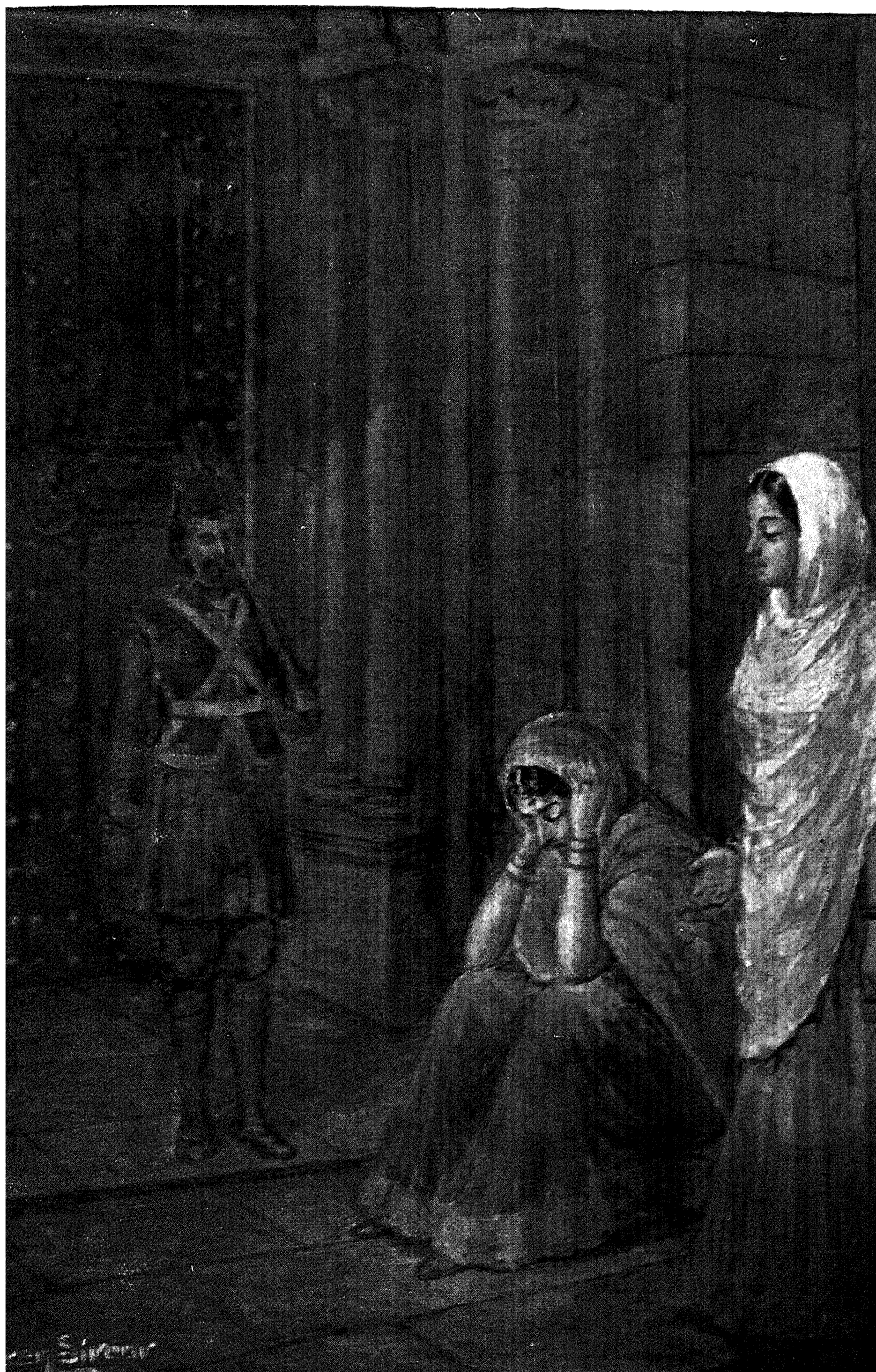
दलनी की चिट्ठी ।

दलनी की चिट्ठी ।

दलनी सुअवसर न पाकर रास्ते में भटक रही थी। इसी समय उसे एक ब्रह्मचारी से भेंट हुई। वह ब्रह्मचारी दूसरा कोई नहीं था। चन्द्रशेखर ही अपनी स्त्रीके वियोग से घर द्वार छोड़ कर उसी भेष में भटक रहे थे। उनने देखा कि उन्हीं की तरह एक भाग की मारी दो पहर रात को रास्ते में इधर उधर घूम फिर रही है। उसके साथ और दो आदमी हैं। वे उन दुखिया अवलाओं पर दया करके उन लोगोंको अपने घर लिवा ले गये। यह घर प्रतापका था। सुन्दरी से खवर पाकर शैवलिनी और चन्द्रशेखर की खोज में प्रताप निकल पड़ा था। अभी मुंगेर में आकर उसने एक बासा लिया था। चन्द्रशेखर को ढूँढ़ निकालने पर उसने उन्हें भी उसी बासे में रक्खा था। घर जाकर चन्द्रशेखर ने दलनी का परिचय पाया। तब चन्द्रशेखर की राय से दलनी ने नवाब के नाम से एक चिट्ठी लिख कर उन्हीं के हाथ में दी। नवाव के दर्वार में चन्द्रशेखर की पूरी प्रतिष्ठा थी। अत: दलनी का पत्र बेरोकटोक यथा स्थान भेजने में उन्हें कठिनता नहीं हुई। दलनी ने अपनी चिट्ठी में सब बातें संक्षेप में नवाव को लिख कर अर्ज किया था।
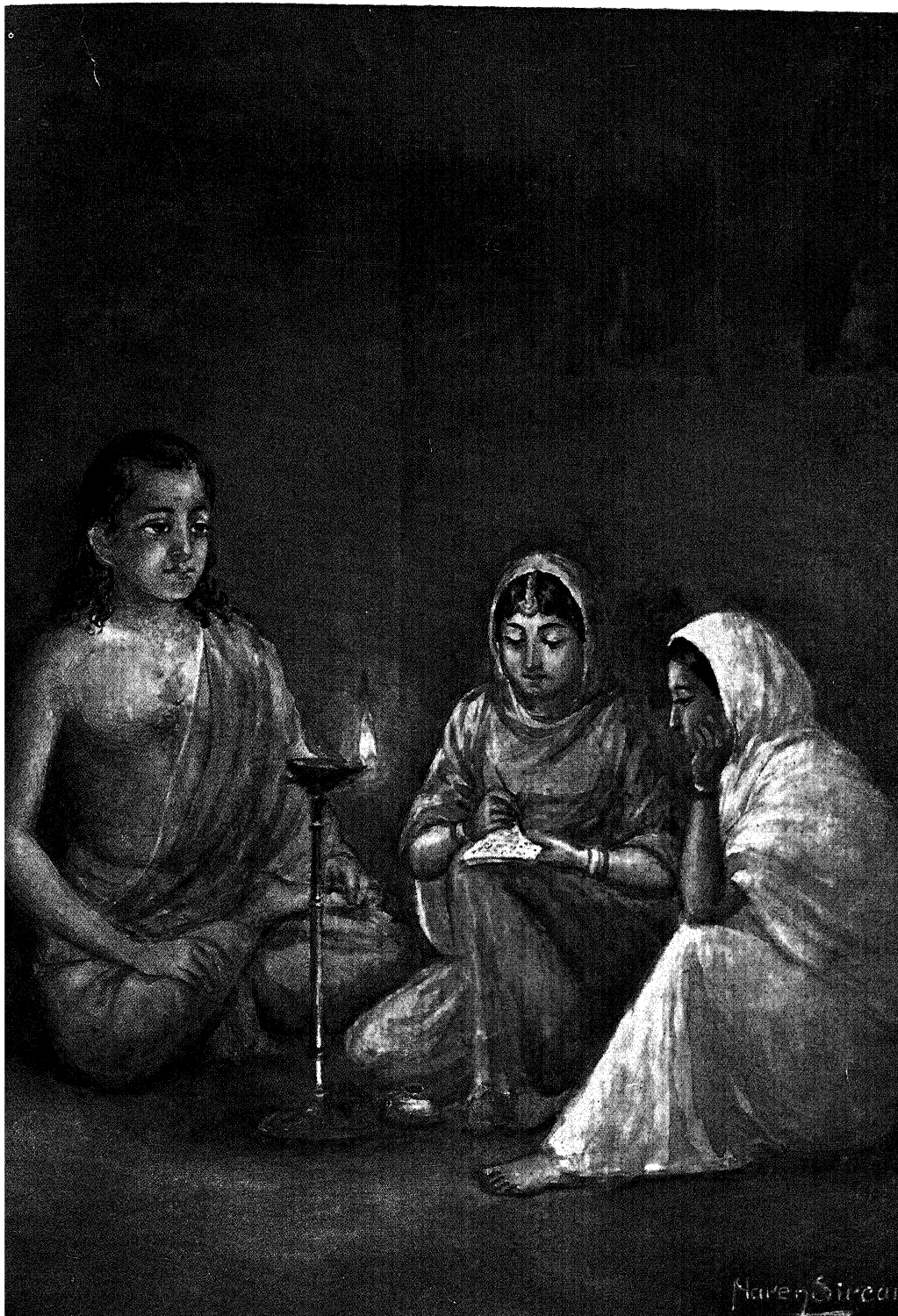
सुन्दरी की राजनीति ।

सुन्दरी की राजनीति ।

कहा जा चुका है कि सुन्दरी ने प्रताप को शैवलिनी का हरण तथा चन्द्रशेखर के वैराग्य की खबर दी थी। किन्तु उस खबर के पहुँचाने में भी एक चालाकी थी।

शैवलिनी के यहाँ से जबसे क्रोध करके सुन्दरी आई थी तब से कितने दिनों तक वह बराबर शैवलिनी को गालियां देती और रोया करती थी। किन्तु तिस पर भी जब उसका शोकार्द्र हृदय हल्का नहीं हुआ तब मन बहलाने को ढाके की साड़ी पहन कर वह अपने एक कुटुम्ब के घर घूमने चली। यह कुटुम्ब प्रताप राय थे। चन्द्रशेखर ने ही शादी की बातें पक्की कर सुन्दरी की छोटी 'रूपसी' बहिन के साथ प्रताप की शादी कराई थी। उसी नाते से सुन्दरी ने प्रताप के यहाँ आकर शैवलिनी तथा चन्द्रशेखर की कहानी कह सुनाई। यह सुनकर प्रताप गरज कर बोला "यह खबर अभी तक मुझे क्यों नहीं दी थी ? क्या तुम नहीं जानती कि चन्द्रशेखर मेरे सर्वस्व हैं ?"

चन्द्रशेखर ही ने सिपारिश करके प्रताप को नवाब की नौकरी दिलाई थी और उसी की बदौलत प्रताप आजकल बड़े भारी जमींदार बन चले थे। प्रताप यह बात नहीं भूले हैं यह देख कर सुन्दरी यद्यपि मनहीमन फूली न समाई किन्तु तौभी विष सनी हुई बात बोल उठी "मनुष्य बड़ा पद पाने पर अपने उपकारी जनों का उपकार भूलते हैं" प्रताप क्रोध के मारे आग-बबूला होकर वहाँ से झट उठ चला।

Naren Sircar

रामचरण की लड़ाई।

रामचरण की लड़ाई।

चन्द्रशेखर और शैवलिनी की खोज में तुरत प्रताप, बाहर निकला। घूमते फिरते मुंगेर पहुँचा। मुंगेर आनेका एक कारण था। वह शहर उन दिनों बङ्गाल की राजधानी था। फष्टर कलकत्ते से अस्त्र शस्त्र का भण्डार लेकर शैवलिनी को साथ लिये पटने जा रहा था। मालूम होता है यह खबर प्रताप के नज़दीक पहुँच चुकी थी। इसी हेतु प्रताप मुंगेर बासा ले आया था। हमलोगोंने चन्द्रशेखर को इससे पहले ही प्रताप के बासे पर देख ही लिया है। अभी यदि प्रताप शैवलिनी को छुड़ा कर ला सकें तब चन्द्रशेखर के प्रति कृतज्ञता के कर्त्तव्य का शेष उन्हें (प्रताप को) हो सकता है। किन्तु यह बात बहुत सीधी नहीं है। शैवलिनी तो फष्टर की नाव पर बन्दी है।

किन्तु इस बीच में एक सुविधा होगई। अङ्गरेजोंके साथ नवाब की लड़ाई का सूत्रपात हो जाने पर अङ्गरेजों के अस्त्रशस्त्र पटने की कोठी से जाताथा। नवाब के सेनापति गुरगन खाँ ने उस नाव को रोका। साथ साथ जिस नाव पर शैवलिनी थी वह भी रोकी गई। इसी बीच में यही सुयोग पाकर प्रताप राय एक दिन आधी रात को शैवलिनी की नाव पर डकैती करके उसे ले भागा। जिस जगह पर शैवलिनी की नाव औ फष्टर की नाव रात में लङ्गर डाले खड़ी थीं उसके नजदीक ही एक बन था। प्रताप के नौकर रामचरण ने उसी जंगल की आढ़ से आधे सोये हुए पहरियों के ऊपर गोली चलाई। बन्दूक की आवाज सुन कर फष्टर भी बन्दूक हाथ में लिये बाहर निकला। हथियारवाली नाव पर के पहरी सब दौड़के उसी तरफ आने लगे। रामचरण की गोली की चोट से फष्टर मर कर पानी में गिर पड़ा। इधर प्रताप आकर छूरी हाथ में लिये नाव के नीचे अन्धेरे में पानी में खड़ा था। पहरी और फष्टर चोट खाके गिर पड़े हैं यह देख कर चुपके से वह नाव की डोरी काट कर नौ दो ग्यारह हुआ। हथियार वाली नाव पर के लोग तब तक भी नहीं पहुँच सके। प्रताप जल्दी से पतवार के सहारे नाव को नदी के किनारे से बहुत दूर अगाध जल में ले गया।
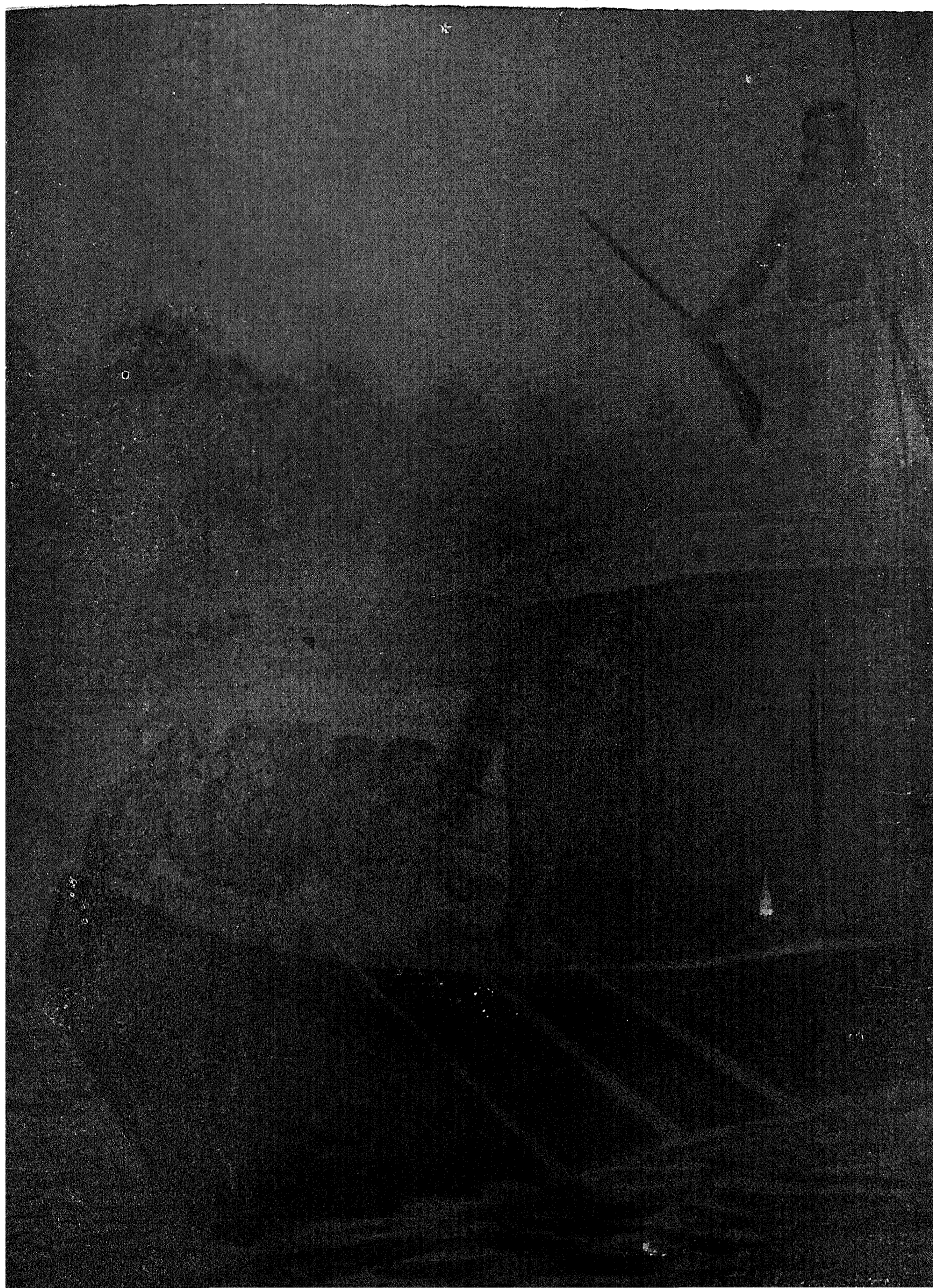
शैवालिनी का उद्धार ।

शैवलिनी का उद्धार ।

तब भी नाव पर एक तिलङ्गा सिपाही था। प्रताप ने खड़े होकर देखा कि वह सिपाही उसी पर निशाना करके बन्दूक चला रहा है। प्रताप ने झट से उसके हाथ में चोट कर उसके हाथ से बन्दूक को गिरा दिया एवं उस बन्दूक को तथा फष्टर के हाथ की बन्दूक को लेकर उसके तथा मांझी के प्रति निशाना करके बोला "खबरदार, मांझी! पतवार पकड़ो। और जो जहां पर हो वह वहीं पर ठहरो। नहीं तो तुम्हें बन्दूक से दाग दूँगा। मैं अभी जाता हूं। जान रक्खो मेरा नाम 'प्रताप राय' है। नवाब को भी मेरा डर लगता है। इन्हीं दो बन्दूकों से तुम लोगों में से बहुतों को अकेले ही मार गिराऊंगा।" डरके मारे मांझी पतवार चलाने लगा। कुछ दूर के बाद प्रताप राय लट्ठधारी अपने अनुचरों से जा मिला। रामचरण भी पहले कहे हुए के मोताविक एक पालकी लेकर वहीं पर खड़ा था। प्रताप का हुक्म पाने पर वह शैवलिनी को पालकी में लेकर चल पड़ा। शैवलिनी ने समझा कि उसे डकैतों का कोई दूसरा दल बाँधे लिये जा रहा है। किन्तु इस दल का सरदार प्रताप राय था यह वह नहीं जान सकी। डाकुओं के एक दल से छूटकर डाकुओं के दूसरे दल में लाई गई हूं यह देख कर शैवलिनी न इससे डरी और न दु:खिता हुई।

बहुत दिनों पर ।

बहुत दिनों पर।

प्रताप ने कह दिया था कि "शैवलिनी को जगत्सेठ के घर में ले जाइयो। किन्तु इतनी रातको वहाँ पर जाकर सब सल्तनत करना मुश्किल जान पड़ा। अतः रामचरण ने अपनी अकिल लड़ाकर उसे प्रताप ही के घर में ले जाकर उसी के बिछौने पर सुला दिया। प्रताप एकाएक जब सोने के घर में पैठा तब उसने शैवलिनी को देखा और चौंक उठा। शैवलिनी उस समय आंख मूंदकर अपने खोटे भाग्य को मनही मन कोस रही थी। प्रताप अब अपनी नज़र नहीं छिपा सका। बहुत दिनों पर यह मुलाकात हुई थी। हा बाल्यावस्था की वह छोटी कली आज यौवन के विकास से सौ दलों (पत्तों) में फूट गई है। अब लौट कर बन्दूक को दीवार से लगाकर भागने की चेष्टा करने लगा। एकाएक बहुत शब्द हुआ। उसी आवाज से शैवलिनी की आँखें खुलीं। प्रताप को पहचानतेही वह 'प्रताप! प्रताप!! कह कर मूर्च्छिता होकर पड़ रही। कुछ देर के बाद जब ठराढा उपचार कर प्रताप उसे होश में लाया तब वह बोल उठी "सच सच बताओ तुम कौन हो? तुम प्रताप हो या कोई देवता मुझ से छल करने आये हो? प्रताप बोला "मैं प्रताप ही हूं।" शैवलिनी बोली "हाँ, नाव पर एक दफे तुम्हारी आवाज़ सुनी थी किन्तु उस समय चूंकि मैं स्वप्न देख रही थी अतः मैंने समझा कि यह भी सपना ही होगा। तुम्हारे वहाँ जाने का कौन सम्भव था!"
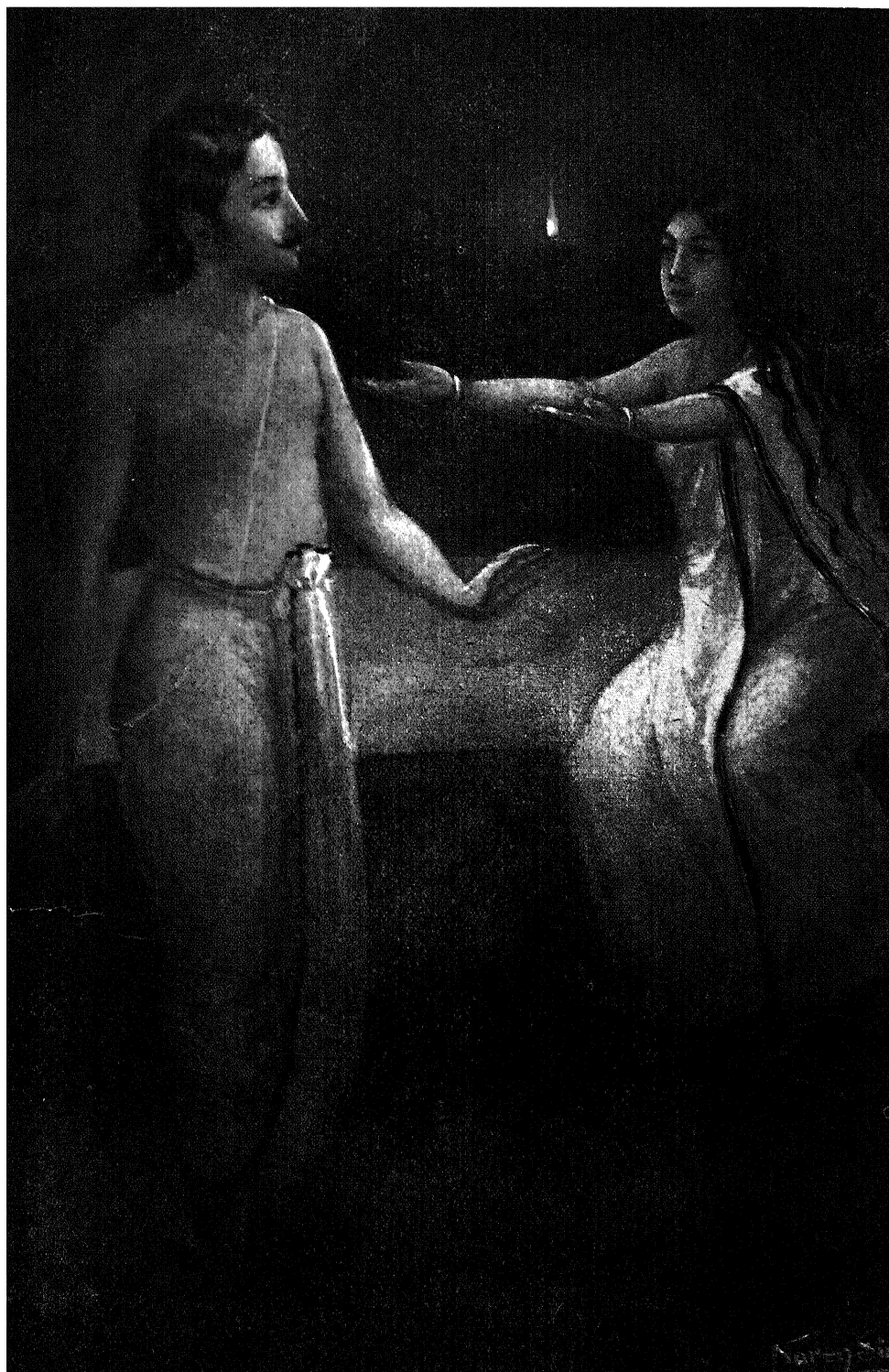
बन्दी ।

बन्दी ।

शैवलिनी को लेकर जब प्रताप और सबों को छुटकारा देकर अपने बासा की ओर चला था तब वह दुष्ट सिपाही जो प्रताप के हाथ से चोट खाकर घायल हुआ था पीछे २ उस पालकी को पीछा किये ही चला गया और प्रताप के घर को पहचान लिया। बाद वह बहुत जल्दी इनाम की तौर पर मोटी रकम पाने की लालच से मुङ्गेर जाकर अङ्गरेजों के प्रधान अफसर अमियट को सारी ख़बर दे आया। अमियट ने तुरत चार सिपाहियों के साथ गलष्टन तथा जनसन नामक दो साहबों को प्रताप के विरुद्ध भेजा। वे लोग तुरत वहाँ आ धमके। प्रताप शैवलिनी के कमरे से ज्यों ही बाहर निकला तभी उसे उन यमदूतों का दर्शन हुआ। उन्हें देखते ही वह ताड़ गया और रामचरण को कमरे से तुरत बन्दूक लाने को कहा। इसी बीच में एक साहब ने प्रताप के पाँव में गोली मार कर उसे भूमिशायी किया। और बल प्रयोग करना व्यर्थ होगा ऐसा समझ कर प्रताप ने अधीनता स्वीकार कर आत्म-समर्पण कर डाला।

भिन्न भिन्न अवस्थाओं में पड़ी हुई शैवलिनी, दलनी बेग़म, कुलसम सभी उस समय प्रताप ही के घर में थीं। चलते वक्त तिलङ्गा सिपाही ने दलनी तथा कुलसम को देख लिया। उन्हें देखते ही सिपाहियों ने मन में स्थिर किया कि यह शैवलिनी फष्टर साहेब की बीबी है। अतः दलनी तथा कुलसम को भी सिपाहियों ने साथ कर लिया।
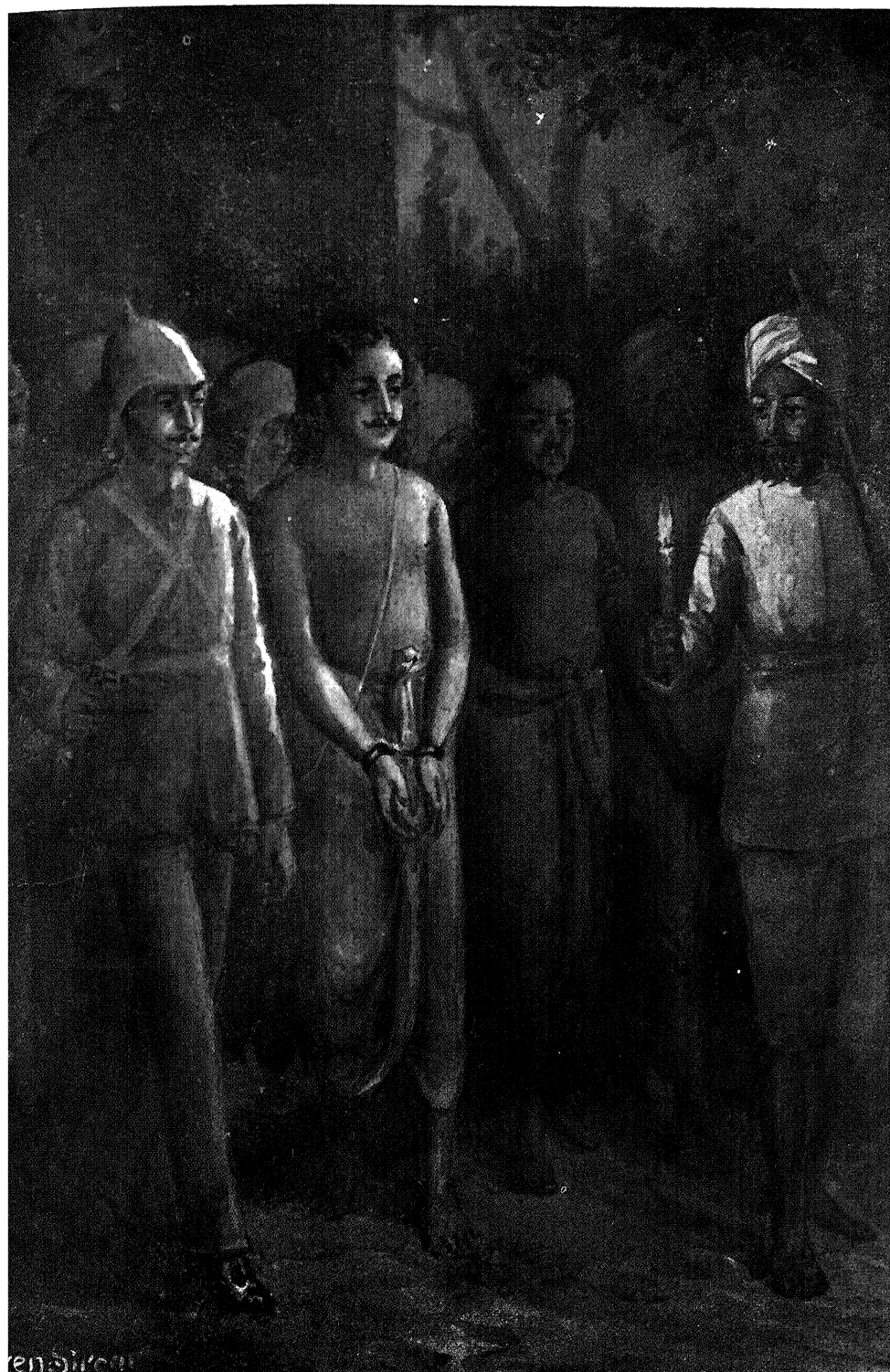
बिवेक की लड़ाई ।

बिवेक की लड़ाई।

शैवलिनी सब बातें देख रही थी। मन में बिचार रही थी कि अब इस मौके पर क्या करना चाहिये ? उसे आज बहुत सी बातें एक ही साथ याद पड़ने लगीं। अपनी पाप-कहानी, लड़कपन, बिवाहित-जीवन, स्वामी के घर में बास, तुलसी-मञ्च, भीमा तलाव, सुन्दरी का प्यार—सभी की यादगारी होने लगी। वह अफसोस करने लगी। हाय ! किसके लिये इतना किया ! मन में मनसूवा बाँधा था कि घर से बाहर निकलते ही प्रताप रूपी खोया रत्न पा लूंगी। हाय रे ! मेरे मन में क्या ही यह बिचित्र भ्रम लगा था। मैं क्यों न मर गई ? अब भी मर जाऊं ? ऐसा सोचते ही उसके कमर में जो एक तीखी छूरी छिपी थी उसे निकाल कर छाती पर रक्खा। एकाएक प्रताप की बात याद आई। प्रताप को पकड़ कर ले गया। उसे क्या होगा यह बिना जाने मर नहीं सकती। बस् उसने छूरी लुका रक्खी। इसी बीच में चन्द्रशेखर की एक तसबीर के ऊपर जो प्रताप के घर में लटक रही थी, नज़र दौड़ गई। शैवलिनी को मालूम था कि वह साधु हो गये। वह भी कैसे होंगे। इस जीवन में तो उन्हें प्यार नहीं कर सकी। किन्तु फष्टर मर गया है। अब और कौन गवाही देगा ? इसी उधेड़बुन में जब वह लगी थी तब चन्द्रशेखर की पवित्र मूर्त्ति उसके सामने से दूर भागने लगी।

रामानन्द स्वामी ।

रामानन्द स्वामी।

जो चन्द्रशेखर के गुरु थे वह ऋषि तुल्य अपूर्व तपस्वी पुरुष थे। ज्ञान, पवित्रता, करुणा, योगवल—सभी में उस समय वह सब से बढ़ चढ़ के थे। चन्द्रशेखर अपनी कठोर मानसिक पीड़ा की अवस्था में उनके शरणापन्न हुए। गुरु ने शिष्य को गोदी में रख लिया। संसार रूपी बिष-समुद्र में अमृत-प्रवाह रूपी गुरूपदेश ने चन्द्रशेखर को स्वर्ग प्रांत में पहुँचाया। संसार के तुच्छ शोक तथा दुःख से दूर हट कर उस ज्योतिमय अपूर्व देश का आभास पाकर चन्द्रशेखर को आश्वासन मिला। गुरु का सदुपदेश सुन कर भक्ति भाव से वह उन्हें बारम्बार प्रणाम करने लगे। गुरु ने भी शोकतप्त शिष्य को आलिङ्गन करके उन्हें आश्रय दिया। उस दिन से चन्द्रशेखर तथा शैवलिनी का भार स्वामी जी के ऊपर पड़ा।
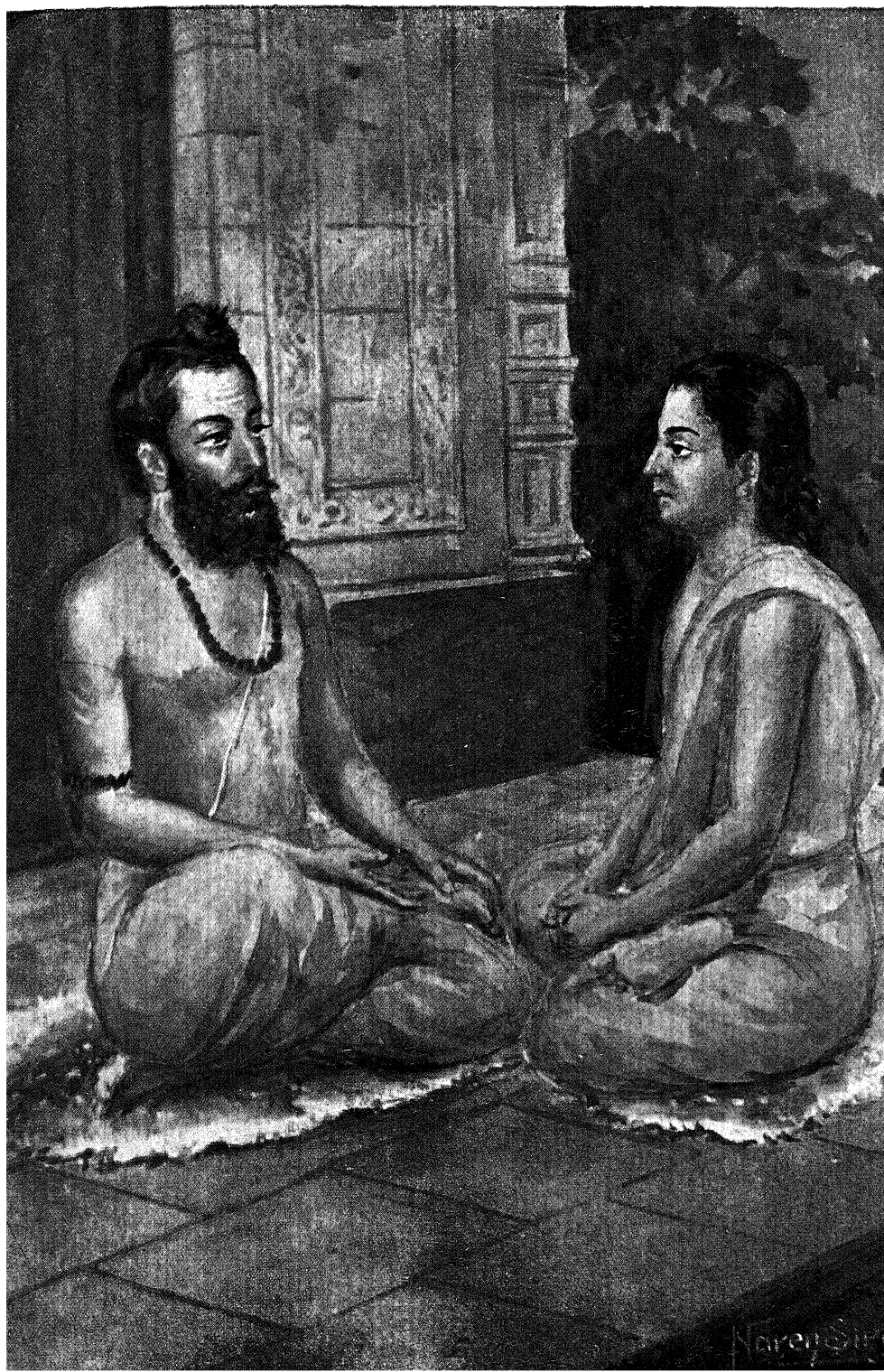
शैवलिनी की नालिश ।

शैवलिनी की नालिश ।

दलनी बेगम की चिट्ठी ठीक समय पर नवाब को पहुँची। उन ने उसी वक्त एक पालकी, प्रताप के घर पर, भेजी। नवाब के सिपाहियों ने शैवलिनी का अनुपम रूप देख कर और प्रताप के यहाँ किसी दूसरे को न पाकर उसी को दलनी समझ औ पकड़ कर रवाना किया। किन्तु जब नवाब बड़ी उत्सुकता से उसे देखने गये तब क्या मालूम हुआ कि वह उनकी प्यारी 'दलनी' बेगम न थी।

नवाब ने जब शैवलिनी से उसका परिचय पूछा तब उसने अपने को प्रताप की स्त्री 'रूपसी' कह कर परिचय दिया। साथ ही साथ अंग्रेज जिस तरह प्रताप तथा बेगम को पकड़ कर रफूचक्कर हुएथे सब बातें कह कर नवाब से यह भिक्षा मांगी कि वह उसके स्वामी को या तो छुड़वा दें या उसे उन्हीं के पास पहुंचवा दें नहीं तो वह अपना सिर फोड़ कर मर जायगी।

दूसरी चांदसुल्ताना ।

दूसरी चांदसुल्ताना ।

गुरगन खाँ को बुला कर नवाब ने समझ लिया कि अमियट साहब उसी रात को मुंगेर छोड़ कर पटने की ओर रवाना हुआ था। प्रताप के साथ २ कुछ औरतों को भी वह साथ ले गया था। यह सुन कर नवाब आगबबूला हो गये। साथ २ यह भी प्रतिज्ञा मन ही मन कर डाली कि अङ्गरेजों के साथ लड़ाई का निपटारा हो जाने पर गुरगन खाँ का बदला खूब ठिकाने से लिया जायगा। गुरगन खाँ की इच्छा के विरुद्ध अमियट कभी उसे अकेला छोड़ कर दूसरी जगह जा नहीं सकता था। इस कारण से तथा दलनी के साथ उस कार्रवाई से नवाब के मन में और सन्देह होने लगा। किन्तु अङ्गरेजों के साथ लड़ाई में गुरगन खाँ नवाब का दाहिना हाथ हो रहा था। अतएव एकाएक उसे सज़ा नहीं दे सके।

प्रताप नवाब के राज्य से बाहर चला गया है यह बात सुन कर शैवलिनी ने फिर प्रार्थना कर कहा "दया करके मेरे साथ एक अपना आदमी दीजिए जो मुझे अङ्गरेजों की नाव दिखा आवेगा। मेरे स्वामी वीर पुरुष हैं। एक भी हथियार हाथ लगने पर वह स्वयं छूट जायेंगे। मैं वही अस्त्र किसी तरह अपने स्वामी को पहुँचा आऊँगी।"

नवाब ने शैवलिनी की बात सुन कर और उसका चेहरा देख कर समझ लिया कि यह औरत मामूली दर्जे की नहीं है। उन ने तुरत मसीरुद्दीन सहिस नामक खोज़ा (नपुंसक) को बुला के कहा "इन (स्त्री) के साथ जाओ। यह जो हुक्म फरमावें वही करना। इनके प्रति बेगम की तरह व्यवहार करना।

शैवलिनी दरबार से बाहर होतेही एक नाव, दासियाँ, बन्दूक, पिस्तौल प्रभृति अस्त्र शस्त्रादि लेकर मुर्शिदाबाद की तरफ रवाना हुई। मसीरुद्दीन की हिम्मत न पड़ी कि वह पूछे कि इन सबों की क्या दरकार है। उस ने मन में सोचा कि यह तो मानों दूसरी "चांदसुल्ताना है।" इधर नवाब ने मुर्शिदाबाद के नौकर तकीखाँ के पास पैदल सिपाही द्वारा एक जरूरी परवाना भेजा कि वहाँ पहुँचते ही अङ्गरेजों को बन्दी करो। उनके साथ के लोगों को दर्बार भेजो।"

नवाब का परवाना, अमियट को पहुंचने के पहले ही, मुर्शिदाबाद पहुंचा।

पगली ।

पगली ।

मुर्शिदावाद जाते २ रास्ते में नाव को लङ्गड़ डाल कर अमियट आमोद कर रहा था। इसी समय कुछ दूर पर एक मैदान में रोने की आवाज सुनाई दी। अमियट ने अचरज में आकर वहाँ जाकर देखा कि उसी दो पहर रात को मैदान के बीच में अकेली रोती हुई अनुपम सुन्दरी "रूपसी" विद्यमान है। शैवलिनी के आकार प्रकार तथा बेमतलव की बात और हँसी दिल्लगी की बातें सुन कर सभों ने अनुमान किया कि यह पगली है। शैवलिनी ने खाने की इच्छा प्रगट की। अमियट साहेब की आज्ञा पाकर तथा शैवलिनी के रूप से मुग्ध होकर एक मुसलमान खानसामा बड़ी खुशी से उसके पास भात खिलाने को ले गया। शैवलिनी ने कहा "मैं ब्राह्मण की स्त्री हूँ। मुसलमान के हाथ का भात नहीं खा सकती"। तब साहेब की आज्ञा से हाल में पकड़ी गई शैवलिनी प्रताप की नाव पर ले जाई गई। यद्यपि हाँडी में भात नहीं था तौभी प्रताप ने कहा "हाँ भात है, कड़ी खोल दो। पगली को खिलाता हूं"।

शैवलिनी को खिला कर उसे अन्दर महल में पहुंचाने के लिये पीर बक्श खानसामा बहुत जल्दीबाजी कर रहा था। वह तुरत साहेब का हुक्म ले आया और प्रताप की हथकड़ी खोल डाली। शैवलिनी भीतर पैठी।

छुटकारा ।

छुटकारा ।

प्रताप जब भात खिलाने का मिथ्या अभिनय करते हुए भागने का मौका खोज रहे थे तब शैवलिनी घूंघट उठाके उनके सामने आई। दोनों ने बहुत जल्दी से बातें कर लीं। शैवलिनी चिल्ला उठी "बाप रे बाप! मेरी जात गई। यह तो मुसल्मान का छूआ भात है। मैं अब जी कर क्या करूंगी यह मैं गङ्गाजी में डूब के मर जाती हूँ" यह कह कर वह पानी में कूद पड़ी। प्रताप भी "स्त्री हत्या हो रही है दौड़ते जाओ इसे निकालो" कहते हुए और गगनभेदी हाहाकार करते हुए जल में कूद पड़े। 'कैदी भागा', 'कैदी भागा' ऐसा बड़ा भारी शोरगुल मचा। इधर दोनों तैरने की कला में निपुण थे ही। दोनों बहुत दूर चले गये। प्रताप सचमुच उस नवाब की नई चिड़िये को बचाने जारहा है यह सभी को विश्वास पहले था। इसीसे किसी ने उनके प्रति गोली नहीं छोड़ी। जब तक असली बात लोगोंकी समझ में आई तब तक वह बहुत दूर निकल पड़े थे। शैवलिनीने रास्ता काटते काटते एक नाव पर फष्टर का मुखड़ा देखा। बहुत देर तक उसी मुखड़े में सौ भीषण दृश्य दीखने लगे।
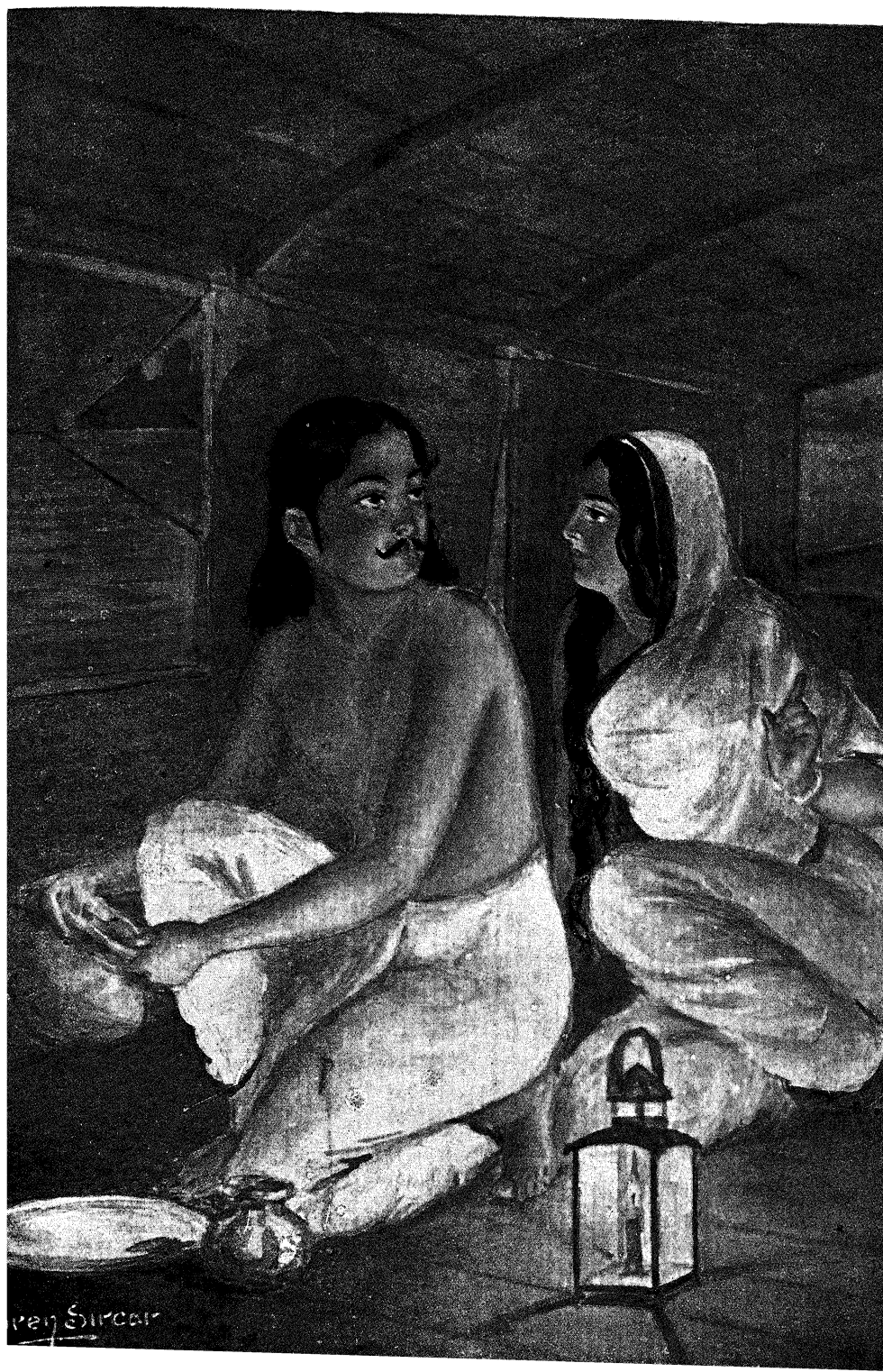
शपथ ।

शपथ ।

इस बार प्रताप तथा शैवलिनी का मिलन और दफे की अपेक्षा अपूर्व था। दोनों को लड़कपन की बात याद आई। कितने दिनों से इस तरह उन दोनों का तैरन् नहीं हुआ था। गङ्गाजीके बीच में चांदनी से जगमगाती हुई रात में दोनों को कितनी बातें याद आईं, कितना दुःख हुआ। प्रताप ने पुकारा "ऐ शै० !" शैवलिनी बोली "फिर घटती हुई इस तरङ्गवाली गङ्गाजी में चन्द्रमा की किरण दिखाई क्यों देती, प्रताप ?" प्रताप बोले "आज एक शपथ करना होगा। मेरी देह छूकर सौगन्ध खाओ।"

शैवलिनी रो उठी। एक लकड़ी गङ्गाजी में उतराती हुई जा रही थी। दोनों उसे पकड़ कर तैरने लगे। प्रताप ने अत्यन्त भय युक्त शपथ की बात कही और बोले "तुम प्रतिज्ञा करो। आज से मेरी यादगारी तक भुलाओ, नहीं तो मैं निश्चय डूब मरूंगा।" आकाश, ग्रह, नक्षत्र, आलोक सभी शैवलिनी की आँख के सामने फीके पड़ गये। इस संसार में शैवलिनी का और क्या उपाय है ? शैवलिनी के समान दुःखिनी दूसरा कौन है ? किन्तु प्रताप ने कुछ भी नहीं समझा। प्रताप ने शैवलिनी का हाथ छोड़ कर डूबना चाहा। तब शैवलिनी ने अत्यन्त गम्भीर और स्पष्ट शब्दों में वह भयानक प्रतिज्ञा की। शैवलिनी पापिष्ठा थी, किन्तु पापिष्ठा होने पर भी शैवलिनी ने प्रताप की भलाई के लिये जो स्वार्थ-त्याग किया वह बड़े ही महत्व का था। वह कुछ मामूली या सीधी क्रिया नहीं थी।
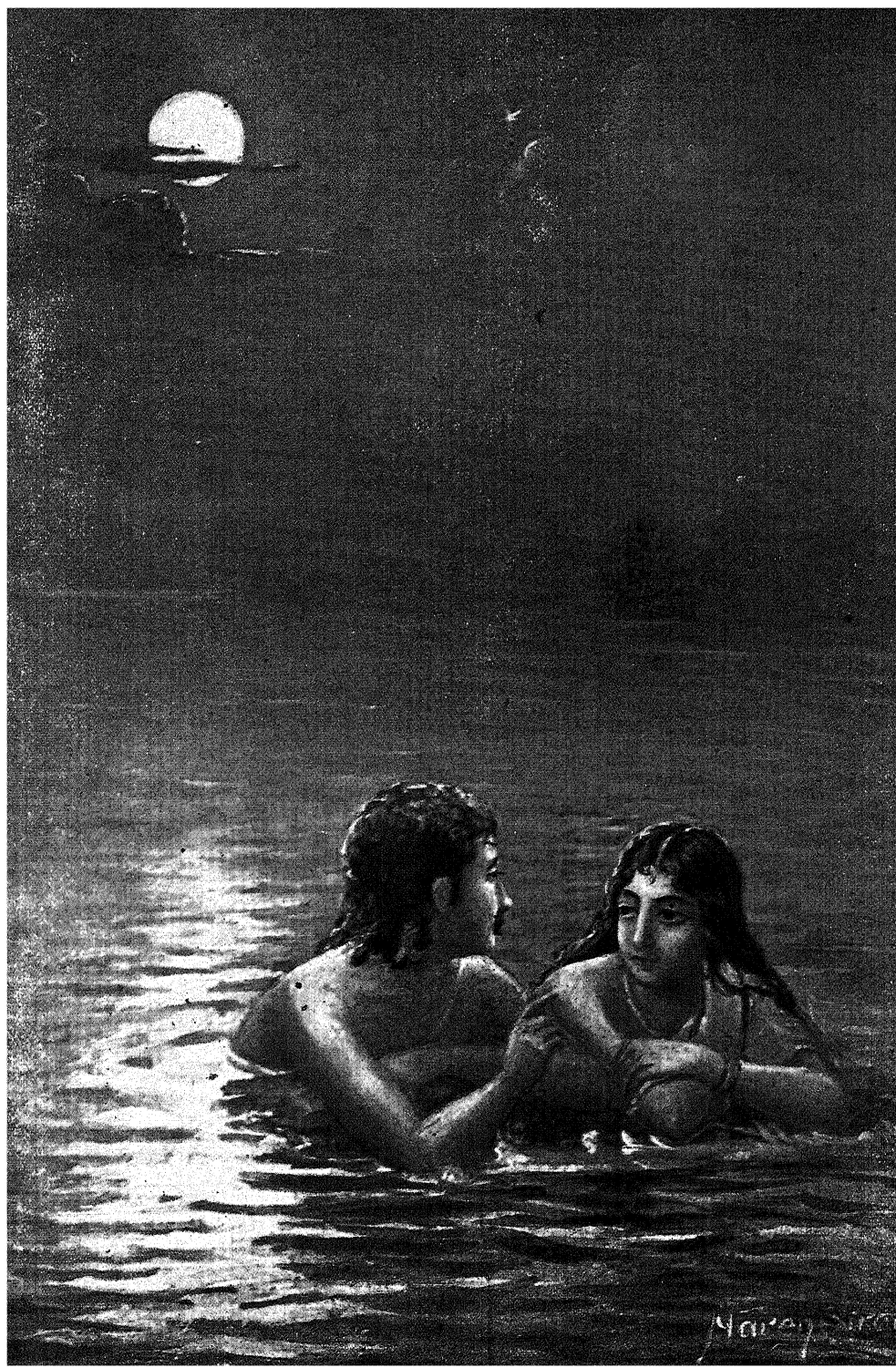
भागजाना ।

भागजाना ।

शैवलिनी ने यदि प्रतिज्ञा की तो वह उसका पालन करने के लिये यत्न करने लगी। शैवलिनी की नाव, समीप में उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। दोनों उसी पर चढ़ गये। किन्तु जब नाव एक एकान्त जगह पर ठहरी तब प्रताप को बिना कुछ कहे सुने शैवलिनी भाग चली। शैवलिनी यह नहीं जानती थी कि रामानन्द स्वामी बहुत दिन पहले ही से दोनों के ऊपर नज़र रखे हुए थे। शैवलिनी प्रताप को छोड़ के भागने ही में व्यस्त थी। वह बहुत तकलीफ झेलती हुई बिना खाये सोये समीप के पहाड़ में लुकाने गई। रात में बहुत अंधेरा था, पानी पड़ रहा था। शारीरिक परिश्रम के कारण उस रात को पहाड़ पर नहीं चढ़ सकी। एक जगह पत्थर पर बैठ गई। वर्षा कुछ कमी। उस प्रबल वायु वेग में तथा गहन अन्धकार में किसने एकाएक उसे छूआ। शैवलिनी ने समझा कि कोई बनैला जन्तु है। किन्तु धीरे धीरे किसी ने उसे गोदी में उठा लिया और वह पहाड़ पर चढ़ गया। मनुष्यों में शैवलिनी को केवल एक 'फष्टर' का डर था। शैवलिनी ने समझा कि यह 'फष्टर' नहीं है। एक दफे पूछा "कौन है ?" किसी ने जवाब नहीं दिया।
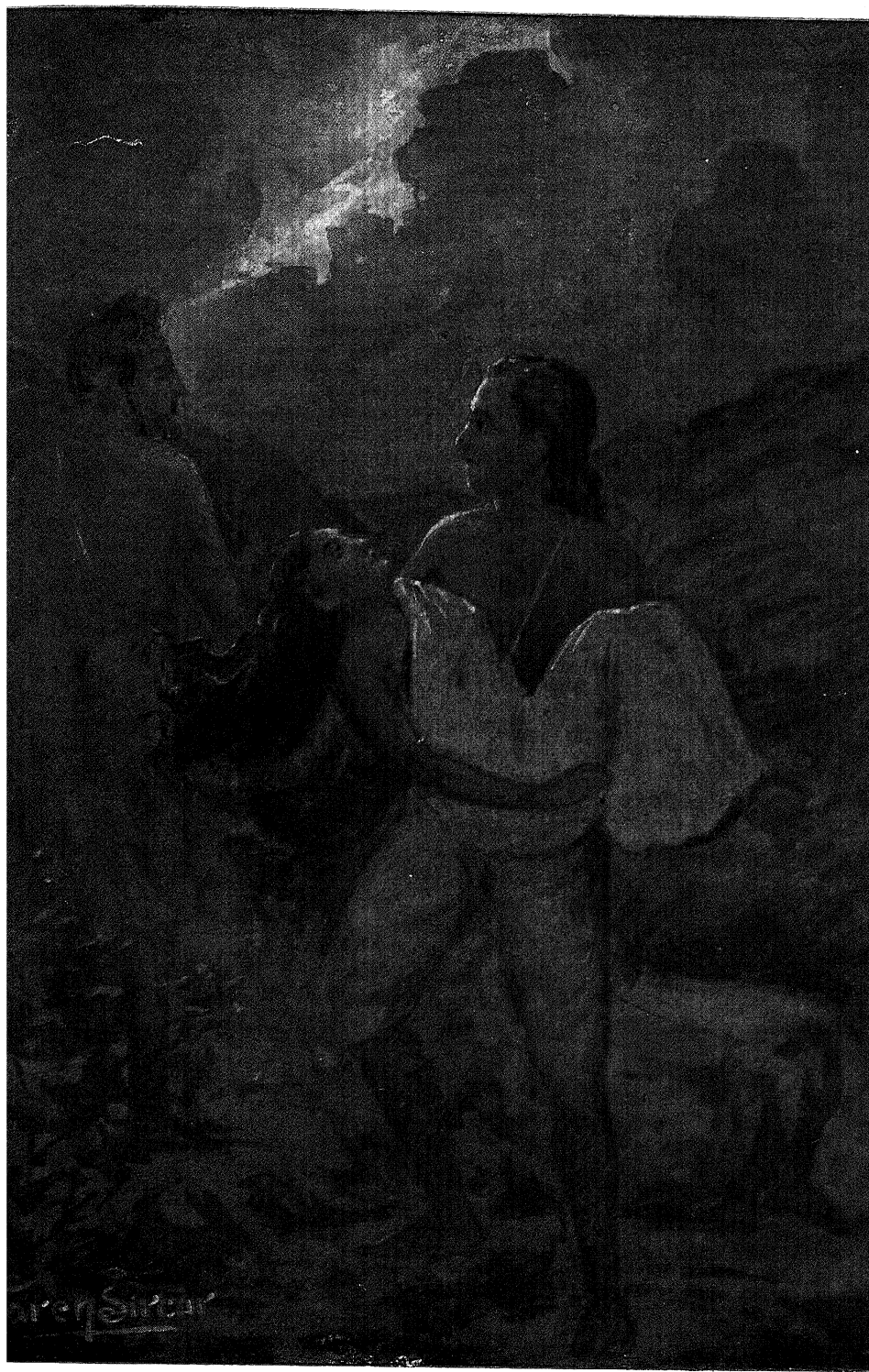
नरक दर्शन ।

नरक दर्शन।

उस पर्वत की अन्धकारमय गुहा में पड़ी हुई शैवलिनी अद्भुत स्वप्न देखने लगी। यह स्वप्न नहीं था यह आत्मदर्शन था। शैवलिनी का प्रायश्चित्त शुरू हुआ। शैवलिनी को मालूम होता था कि नरक की नदी, नरक की विभीषिका उसे चारों ओर से घेरी हुई थी। क्या भयङ्कर कुम्भीपाक नरक का दृश्य था? क्या बुरी महँक मालूम पड़ती थी? क्या भीषण दृश्य युत शोणित-तरङ्ग-वाली नदी —इन सभी भयङ्कर दृश्यों में शैवलिनी की जान काँप उठती थी। जो महापुरुष उसे बरजोरी पकड़ कर पर्वत पर ले गये थे उन्हीं ने मानों फिर उसे उसी नदी में फेंक दिया। तिस पर भी मार पीट करते हुए नदी के दूसरे किनारे पर और अधिक भयङ्कर दृश्य दीखने लगा। कुम्भीपाक का भीषण दर्शन शैवलिनी को खाने दौड़ा। लोहू की धारा उसके मुंह के भीतर पैठने लगी। शैवलिनी चिल्ला उठी "रत्ता करो", "रत्ता करो।" जवाब मिला "बारह वर्ष पर्य्यन्त प्रायश्चित्त करो। बेदग्राम जाओ। लो यह कपड़ा लो।" शैवलिनी ने गुहा की तरफ हाथ बढ़ा कर एक कपड़ा पाया। बोली "क्या करना होगा?" पहले की तरह आवाज़ में फिर जवाब मिला "अपना वस्त्र फेंको, यह कपड़ा पहनो। बाद बेदग्राम जाकर एक पर्णकुटी बना कर कठोर तपस्या करना होगा। बिछौने पर सोना नहीं होगा। भूमि पर सोना होगा। दिन में एकही बार फल मूल खाना होगा। जटा रखने और प्रतिदिन एक दफे भित्ता मांगने के लिये अपने पाप का कीर्त्तन करते रहना होगा।"

विपरीत तरंग ।

विपरीत तरंग ।

बड़ा ही कठोर प्रायश्चित्त था। यह पाप किसी के यहाँ प्रगट करने का नहीं था। तिस पर भी बारह बरस तक! इतने दिनों तक चन्द्रशेखर को भी नहीं देखना होगा। शैवलिनी की हृदय-नदी में विपरीत तरङ्ग उठ रही थी। शैवलिनी ने दूसरे प्रायश्चित्त विधान के लिये प्रार्थना की। तब उसे पर्वत की गुहा में अकेली रहकर थोड़ा खाके अकेली रहने, एकाग्रचित्त से सात दिनोंतक स्वामी का कठिन ध्यान करने के लिये उसे आदेश मिला।

इन्हीं सात दिनों में स्वामी का ध्यान करते करते शैवलिनी ने कितने नरकों के भयङ्कर दृश्य देखे कितनो आत्म-ग्लानि अनुभव हुई। उसे कितनी आत्म-ग्लानि हुई। उसके हृदय से मोह रूपी पर्दा हट गया। उसके बदले पवित्र ज्योति से उसका हृदयकमल विकसित होगया। अब प्रताप की अपेक्षा चन्द्रशेखर ही हजार गुना बढ़िया ज्ञात होने लगा। इन्हीं पतिदेव चन्द्रशेखर को तिरस्कार कर वह प्रताप के लिये उन्मत्त थी। छी! छी!! समुद्र के आगे गङ्गा की दुहाई! शैवलिनी तब स्वामी ही को पाने के लिये व्याकुल हो उठी और उन्हें पुकारने लगी। उन्हींके चरणकमल में अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया। तब उसे मालूम हुआ कि सचमुच उसी क्षण में किसी ने उसे गोदी में उठा के रख लिया। उसी के साथ नरक का सारा भयङ्कर दृश्य न जाने कहाँ एकबार ही विलीन होगया। शैवलिनी को जब होश हुआ, जब उसका स्वाभाविक ज्ञान पलटा तब उसने देखा कि जिसने उसे इस घोर विपत्ति में आश्रय दिया था वह ब्रह्मचारी के भेष में चन्द्रशेखर हैं।

सब शेष

सब शेष

शैवलिनी ने उठके बैठाना चाहा किन्तु दुर्बलता के कारण गिर पड़ी। चन्द्रशेखर ने उसे धर पकड़ा। तब शैवलिनी रो रो कर अपने पतिदेव के चरण कमलों पर लोटने लगी। शैवलिनी के हृदय में आत्मग्लानि रूपी जो आग जल रही थी वह चन्द्रशेखर की तसल्ली देने से बुत गई। शैवलिनी ने आत्महत्या करना चाहा। चन्द्रशेखर ने पाप का डर दिखाया। फिर एकाएक उसके मन में भावान्तर होगया। वह फिर नरक का भयङ्कर दृश्य देखने लगी। कुछ देर के बाद चन्द्रशेखर यह देखकर डर गया कि शैवलिनी अनाप शनाप बकने लगी। हाय! आखिर-को दारुण उन्माद आकर इस सुन्दरी को अधिकार में लाने लगी। चन्द्रशेखर बहुत कष्ट से शैवलिनी को लेकर घर जाने की चेष्टा करने लगा। शैवलिनी के उस समय बक बक करने का कौन ठिकाना था? चन्द्रशेखर से बोली "क्या तुम चन्द्रशेखर को पहचानते हो?" चन्द्रशेखर बोले "मैं ही चन्द्रशेखर हूं।" शैवलिनी तब अत्यन्त करुण स्वर में रोती पीटती उनके गले में लिपट गई और बोली "तब मैं तुम्हारे साथ जाऊंगी, तुम मारोगे तो नहीं।"

चन्द्रशेखर ने "नहीं" कह कर तथा एक लम्बी साँस लेकर घर का रास्ता लिया। तब वह पगली हँसती, हँसती, एवं रोती, रोती उनके साथ चली।
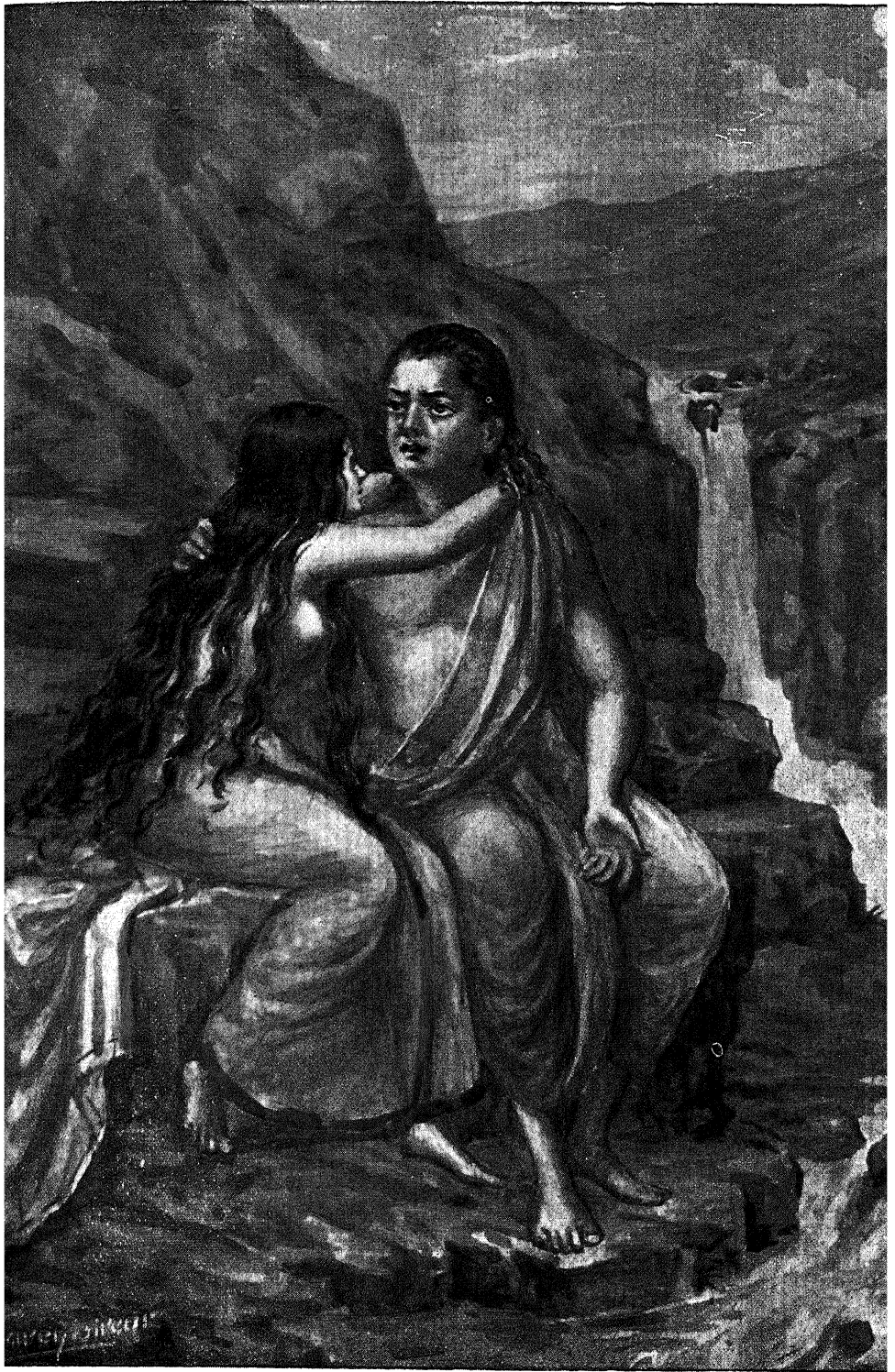
मुर्शिदाबाद में ।

मुर्शिदाबाद में।

इधर नवाब की आज्ञा पाकर मुर्शिदाबाद के नाएब तकी खाँ अङ्गरेजों की दुश्मनी करने लगा। कुछ दिनों में अमियट, फष्टर, गलष्टन, दलनी औ कुलसम को लेकर मुर्शिदाबाद पहुँचे। तकी खाँ ने पहले छल पूर्वक साहेबों को न्योता देकर उन्हें बन्दी करना चाहा। किन्तु साहेबों को शक मालूम हुआ। अत: उनने न्योता नहीं माना। अन्त में चुपके से बल प्रयोग करना पड़ा। तकी की फौज ने साहेबों की नावों पर हमला कर उन्हें तोड़ फाड़ के डुबा डाला। तब लाचार होकर साहेब लोग किनारे आकर लड़ाई करने लगे। एक मुसलमान की तलवार के आघात से अमियट का सिर उतर गया। जौनसन तथा गलष्टन मार खाते खाते मरे। फष्टर उस समय भी बीमार था। इससे पहले ही दलनी तथा कुलसम को लेकर वह कलकत्ते की राह से भाग चला था।

त्यागी हुई ।

त्यागी हुई ।

फष्टर ने भागते हुए देखा कि एक नाव उसकी नाव को पीछा करती हुई आ रही है। इस नाव को तकी की नाव समझ कर फष्टर डर गया। दलनी नवाब की बेगम है, फष्टर ने यह बात सुनी थी। अभी सोचा कि इसी विपत्ति के लिये नवाब के आदमी पीछा कर रहे हैं। अतः उसे छोड़ देना ही अच्छा है। ऐसा सोचकर फष्टर दलनी को किनारे पर छोड़ कर भाग गया।

उस समय साँझ हो रही थी। नवाब के नौकर आरहे हैं यह मन में सोचकर दलनी ने नाव पर से उतरके किनारे पर आने में कुछ भी आपत्ति नहीं की। किन्तु अब अपनो बेवकूफी उसे मालूम पड़ गई। जो नाव उसको पीछा किये जा रही थी वह ज़रा भी नहीं ठहरी बल्कि सीधे अपनी राह ली। दलनी ने कपड़ा उठाकर, हल्ला मचाकर बहुत पुकारा किन्तु नाव तीर पर नहीं अँटकी। दलनी तब हतोत्साह हो सन्ध्या के अन्धकार में उसी भागीरथी के तट पर के विस्तीर्ण जल रहित भूमि पर अकेली पड़ रही।
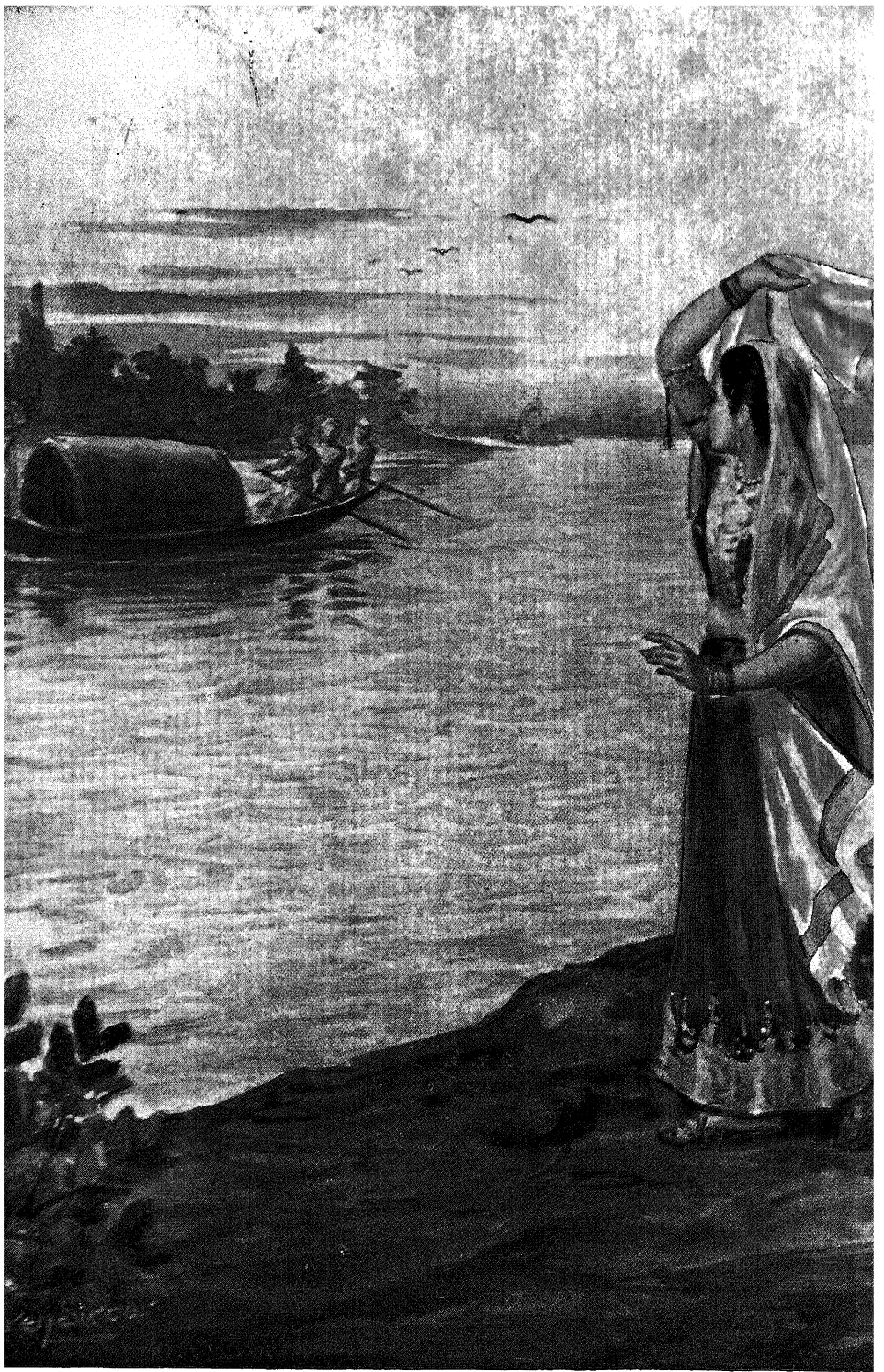
गुप्त परामर्श ।

गुप्त परामर्श ।

मुर्शिदाबाद की इस घटना के बाद नवाब के साथ अङ्गरेजों की लड़ाई की घोषणा हो गई। गुरगन खाँ इसी सुयोग में अपना सुख स्वप्न सफलीभूत करने का मौका ढूँढने लगा। जब अङ्गरेज और नवाब दोनों दल आपस में लड़के बलहीन हो जायँगे तब कौन माई का लाल जनमा है जो गुरगन खाँ की हुकूमत में बाधा डाल सके? किन्तु गुरगन खाँ को असुविधा थी। सैन्य प्रभृति को वशीभूत करने में धन का प्रयोजन होता है। वह धन कहाँ से आवेगा? मुर्शिदाबाद में दो अत्यन्त धनशाली सेठ जिनके नाम स्वरूपचन्द्र तथा महताबचन्द्र थे, रहते थे। ये दोनों नवाब के शत्रु थे। यह बात गुरगन खाँ को जाहिर थी। किन्तु नवाब उन सबों के ऊपर बड़ी कड़ी नज़र रखते थे। अत: एक साथ मिलने का मौका नहीं था। आखिरको उन सेठों ने एक अपूर्व कौशल रचा। उन्हों ने एक दिन एक बड़ा उत्सव मनाकर और जात बेरादरी, अफसर, अमलों के साथ गुरगन खाँ को भी न्योता भेजा। इसी नाच गान के बीच एक बड़ा षड़यन्त्र रचा गया। उन सेठोंने द्रव्य से गुरगन खाँ को सहायता देने की प्रतिज्ञा की।

विधि-लिपि ।

विधि-लिपि ।

उस निर्जन स्थान में बैठी हुई दलनी के पास एक बड़ा लम्बाचौड़ा डील डौल के मनुष्य आकर बैठ गये। पहले दलनी कुछ डरी किन्तु महापुरुष ने कहा "कहो तुम दलनी बेगम हो, मैं सब कुछ जानता हूं। आओ, मैं तुम्हें ले चलूँ। किन्तु, बताओ कहाँ जाओगी? क्या तुम नवाब के यहाँ जाना चाहती हो? तुम्हारे भाग्य में मुंगेर का दर्शन नहीं वदा है। वहाँ जाने से तुम्हारी बुराई ज़रूर होगी।"

किन्तु दलनी ने उस बात की ओर ध्यान नहीं दिया। उनने महापुरुष को कहा "हे महाशय! यदि मुझे ले जाइयेगा तो नवाब ही के पास ले चलिये। दूसरी जगह यदि अमङ्गल हो तो उससे स्वामी के निकट ही अमङ्गल होना सौगुना अच्छा।"

महाकाय पुरुष ने कहा "ख़ैर चलो, वही हो। तुम्हें मुर्शिदाबाद में तकी खाँ के समीप रख छोड़ूंगा।" दलनी उन्हीं के पीछे पीछे चली।

इन महापुरुष का परिचय एक दफे पहले भी दिया जा चुका है। इन्हीं ने शैवलिनी को पर्वत की कन्दरा में आश्रय दिया था।

चन्द्रशेखर ने ज्योतिष की गणना द्वारा एक दिन नवाब को दलनी के भाग्य के विषय में कह दिया था।
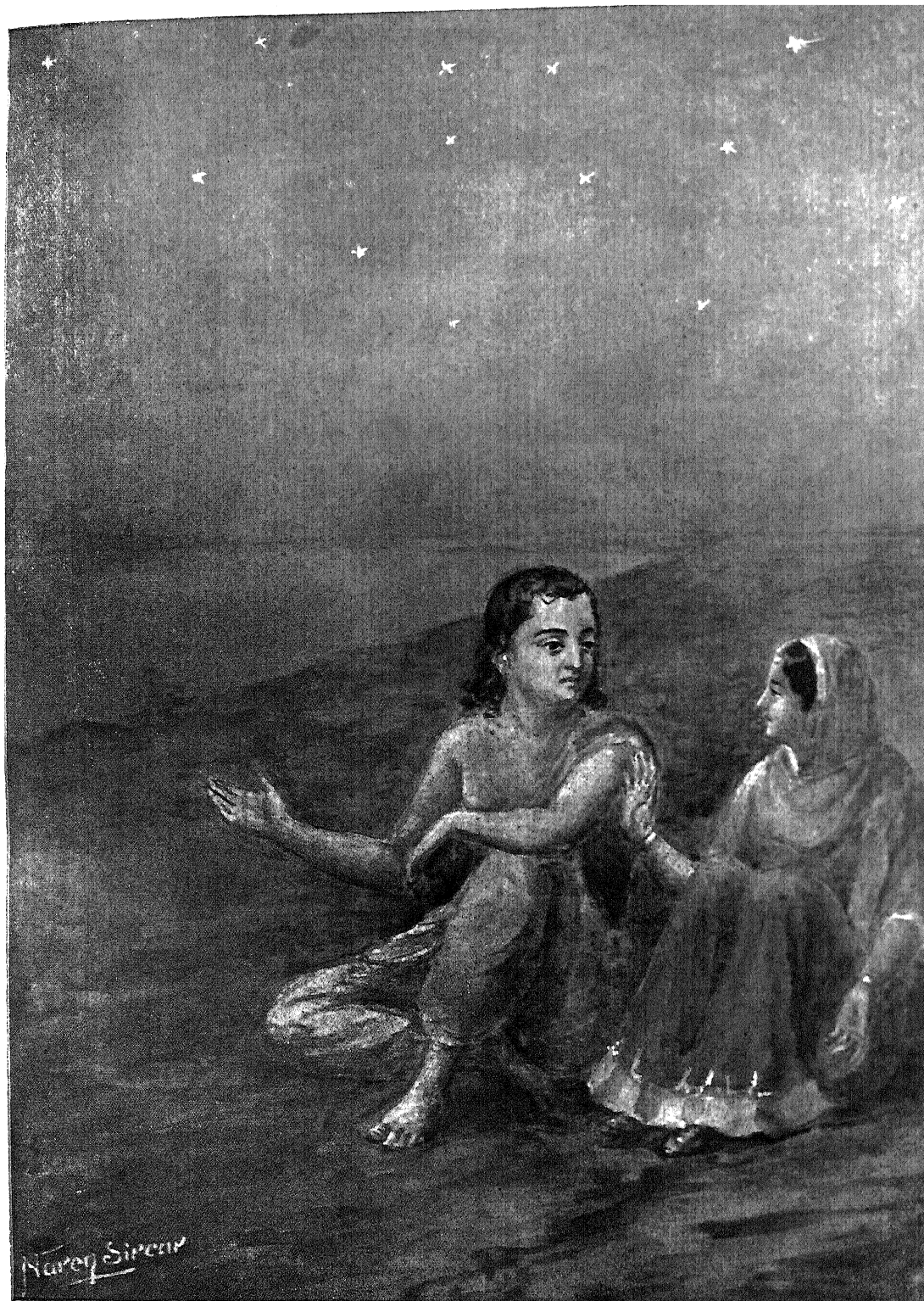
तकी का पराक्रम ।

तकी का पराक्रम ।

अमियट की नाव को पकड़ लेने पर भी जब दलनी बेगम नहीं मिली तब तकीखाँ बहुत ही घबड़ाया । नवाब को वह क्या जवाब देगा ? मज़बूरन उसे छल का उपयोग कर लिखना पड़ा "दलनी मिली सही, लेकिन पता चला है कि उनने अमियट का उपपत्नीत्व स्वीकार किया है और उसी के अन्दर महल में रहती है । अब क्या किया जाय ? हुक्म फरमावें ।" जिस समय यह खबर नवाब मीरकासिम के समीप पहुँची उस समय नवाब की बुद्धि ठिकाने नहीं थी । वह अङ्गरेजों के साथ लड़ाई में हार रहे थे । गुरगन खाँ अविश्वास का परिचय दे रहाथा । उसका बङ्गाल का सिंहासन डमाडोल था । उनने क्रोध के मारे हुक्म दिया कि दलनी विष खिलाके मार दी जाय ।

किन्तु इसी बीच में दलनी चन्द्रशेखर के साथ साथ तकीखाँ के समीप पहुँची । तब दलनी का अलौकिक रूप देख कर तकी खाँ ने सोचा कि यह बहुत अच्छा हुआ कि दलनी अभी हमारे हाथ पड़ी है । जब जान जाने का डर होगा तब वह ज़रूर मेरी वश्यता स्वीकार कर मेरी बीबी बन जायगी ।" तकी खाँ ने इसी भरोसे दलनी को नवाबी परमाना देकर जो सब बातें हुई थीं निष्कपट भाव से उसको बोल दिया । सुन कर दलनी गुस्से में आकर बोली "अच्छा, विष लाओ," तकी खाँ बोला "अब विष नहीं खाना होगा, मैं तुम्हें बचाऊंगा ।" दलनी बोली "तुम्हारे जैसे पापी के यहाँ प्राण की भिक्षा मांगने की अपेक्षा मरना कहीं अच्छा है ।" तकी खाँ को आखिर में दलनी से अपना मनोभिलाष प्रगट करना पड़ा । दलनी ने तब थक कर तकी खाँ को लात मारी ।

दलनी की जय ।

दलनी की जय ।

लात की मार खाकर तकी खाँ भाग गया। दलनी तब विलख २ कर जमीन पर लेटती हुई रोने लगी। उसका असह्य दु:ख मृत्यु की आज्ञा के कारण नहीं था। नवाब का अकारण क्रोध ही उसका मुख्य कारण था। दलनी नवाब के क्रोध की अपेक्षा मौत को श्रेष्ठ समझती थी। हँसती हँसती विष पान कर सकती है। हाय! नवाब यदि पास में रहते तो उसकी शक्ति समझ लेते।

दलनी ने आखिर को अपना कर्त्तव्य स्थिर किया। उसके लिये क्या प्रभुकी आज्ञा पाने के लिये ठहरना होगा? उसने अपनी देह के बेशकीमती गहने गरीब दु:खियों को बाँट दिये और एक दासी के द्वारा विष मंगा कर दलनी ने उसे खालिया। तकी खाँ को जब यह खबर मिली तब वह दौड़ा आया और बोला "यह क्या?" दलनी ने कहा "विष! मैं तेरे जैसा नमकहराम न हूँ। तुझे भी विष खाके मर जाना उचित है।" क्षण भर में दलनी स्वर्गधाम को चली गई।

धर्म्म की ढोल ।

धर्म्म की ढोल ।

तकी खाँ ने समझा था कि दलनी विषयक असली खबर नवाब को नहीं मिल सकेगी। किन्तु संयोग वशात् कुलसम आकर एक दिन नवाब के समीप हाजिर हुई। कुलसम दलनी के साथ फष्टर की नाव पर कलकत्ते जा रही थी। रास्ते में जब दलनी उतर कर चली गई तब कुछ तो नवाब के डर से और कुछ फष्टर के प्रति रोष के कारण वह दलनी के साथ नहीं हुई। किन्तु कलकत्ते पहुँच कर दलनी का वृत्तान्त सुनकर वह व्याकुल हो उठी। तकी ने जो विश्वासघात किया था इस बात को समझने में नवाब को कुछ भी देर न लगी। इस बात को सभी जानते थे। अत: अङ्गरेजोंके हाथ पाँव पकड़ कर फिर नवाब के समीप लौट आई। वहाँ जाकर दलनी के विषय में असली बात जनाकर नवाब को भरी सभा में बेवकूफ कह कर उसे गाली दे डाली।

भूल छूटी ।

भूल छूटी।

सब बातें सुन कर नवाब ने शोक और लाज के मारे शिर नीचा कर लिया। उनने सभासदों से कहा "यह औरत असल में बात बना रही है। मैं ही निरा मूर्ख हूँ। यह राज्य मेरे हाथ में नहीं ठहरेगा। क्या तुमलोगों में से कोई तकी खाँ को पकड़ के हाज़िर कर सकते हो?" तुरत तकी खाँ को पकड़ने के लिये नवाब के अमले चले। नवाब ने इसके बाद उसने साथ साथ फष्टर, शैवलिनी तथा चन्द्रशेखर को दरवार में देखने की इच्छा प्रगट की। सभाके उठ जाने पर नवाब भूमि पर लोटते हुए दलनी के लिये करुणापूर्ण शब्दों में रोने लगे।

फिर वेदग्राम में।

फिर वेदग्राम में।

जिस दिन अमियट साहेब बलपूर्वक दलनी, कुलसम, प्रताप तथा रामचरण को पकड़के ले गया उसी दिन रामानन्द स्वामीने चन्द्रशेखर को दलनी को उद्धार करने के कार्य में नियुक्त किया। शैवलिनी उस समय भी प्रताप के घर में थी। वह उसे काशी भेजने का परामर्श करने लगे। किन्तु इसी बीच में शैवलिनी नवाब के साथ भेंट करके प्रताप के उद्देश्य से चली गयी। अत: रामानन्द स्वामी को उस कार्य्यक्षेत्र में भिन्न रास्ते का अवलम्बन करना पड़ा। वह नदी किनारे की राह से जल्दी जाकर चन्द्रशेखर के साथ जा मिले। एवं प्रताप को छुड़ा कर जब शैवलिनी अकेली भागी तब चन्द्रशेखर उसके साथ हो लिये। शैवलिनी को अचेतन अवस्था में घर में छोड़के जब चन्द्रशेखर फिर दलनी के उद्देश्य में गये थे अभागी नवाब की बीवी उस भीषण जन हीन प्रान्त में निराश्रय जब पड़ी थी तब इन्हीं ने सहारा दिया था। दलनी को तकीखाँ की शरण में रखके फिर जब गुरु के पास लौट आये तब उसे शैवलिनी के साथ मुलाकात हुई। तब तक शैवलिनी का प्रायश्चित्त प्रारम्भ हो चुका था। क्रमश: नरकों के भयङ्कर दृश्य देखते २ शैवलिनी पागल हो गई। तब रामानन्द स्वामी ने पहले का विचार छोड़के उसे चन्द्रशेखर के साथ वेदग्राम भेजा। बहुत दिनों के बाद सुन्दरी फिर शैवलिनी को देखने आई। किन्तु हाय! शैवलिनी की अभी कैसी शोचनीय अवस्था थी। पूर्व परिचित घर जंगलादि प्रान्तों को देखकर क्रमश: उसकी स्मृति जाग उठी। "क्या दो थी और क्या होगई?" —इसी अभिप्राय की बातें बराबर उसके मुँह से निकलती थी।

धर्म का नगाड़ा ।

धर्म्म का नगाड़ा ।

धर्म्म का नगाड़ा ज़रूर बजेगा। फष्टर बहुत दिनों तक पाप करता था। इस दफे उसके सिर डाका पड़ा। कुलसम से हेष्टिंग्स ने फष्टर साहेब का असल परिचय पाया था। उनने बन्दोवस्त करके उसे कम्पनी की नौकरी से हटाया। फष्टर विना काम काज के घर में रह कर समय विताने को बाध्य किया गया। किन्तु वहीं पर उसके प्रायश्चित्त का अन्त नहीं हुआ। एक दिन नवाब के यहाँ के अमले आकर उसे दर बार में हाज़िर करने के लिये एकाएक गिरफ्तार कर ले गये। फष्टर को मीरकासिम के यहाँ जाना पड़ा।

योग बल ।

योग वल।

इसी बीच में चन्द्रशेखर और शैवलिनी को नवाब के यहाँ लेजाने के लिये
दग्राम में नवाब के सिपाही पहुँचे। रामानन्द स्वामी दोनों को साथ लेकर मुंगेर
ी तरफ चले।

वेदग्राम में आकर चन्द्रशेखर कुछ गोलमाल में पड़ गये थे। शैवलिनी के सम्बन्ध
। समाज में एक दोषारोपण हो रहाथा। चन्द्रशेखर एक तरकीव से शैवलिनी को
नर्दोष सिद्ध कर रहे थे। शैवलिनी को योगवल से अभिभूत करके उससे असल
ात मालूम कर ली। चन्द्रशेखर की इच्छा शक्ति के प्रभाव से अभिभूता होकर
ावलिनी ने जो उत्तर दिया उससे ज्ञात हुआ कि प्रताप अपने मन में स्थान देनेके
ातिरिक्त शैवलिनी ने दूसरा कोई पाप नहीं किया।
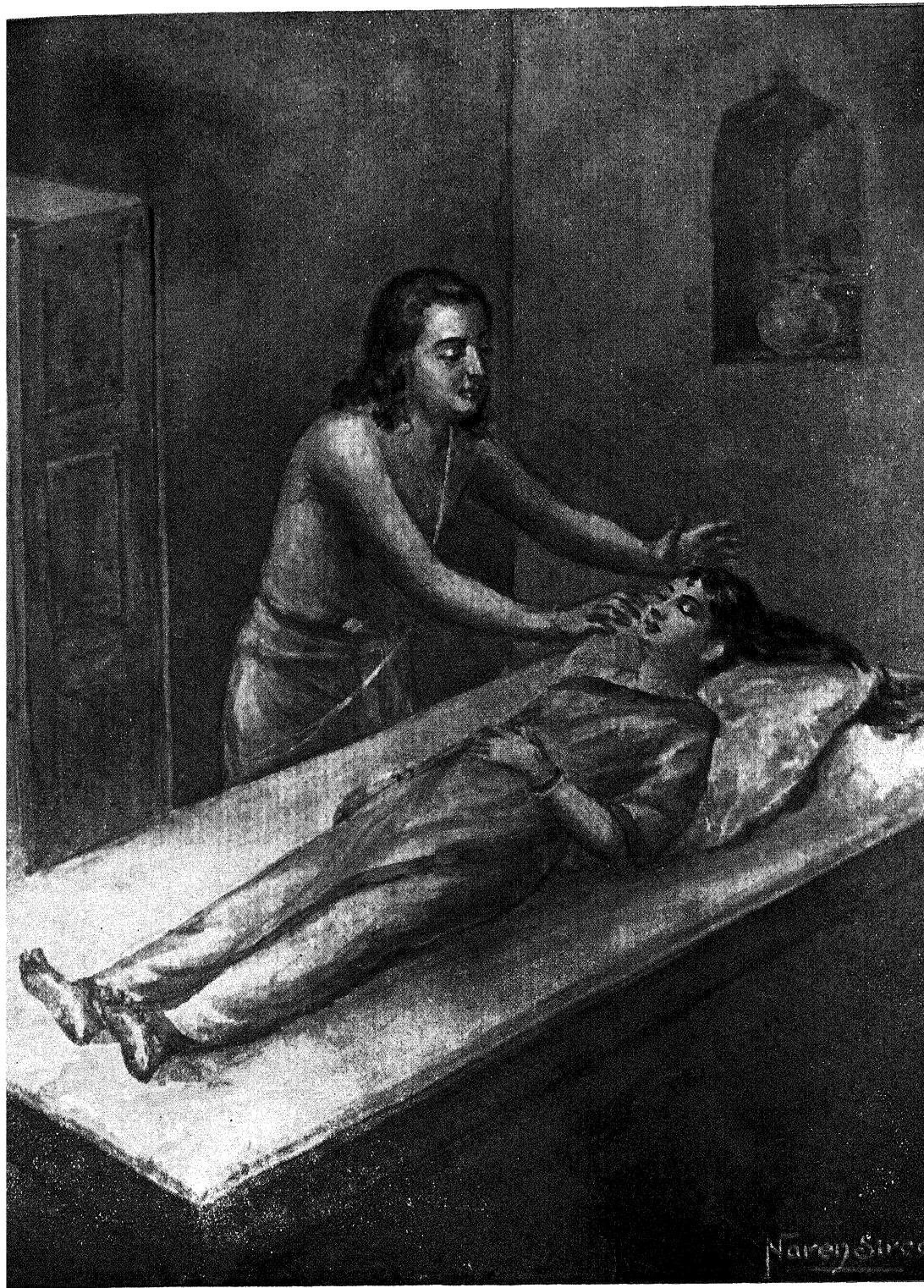
गोलमाल मिटा ।

गोलमाल मिटा ।

नवाब की आज्ञा अच्छी तरह से पाली गई। चन्द्रशेखर, शैवलिनी, फष्टर वे तकी सभी दरवार में हाजिर किये गये। कुलसम ओ फष्टर की गवाही से नवाब दलनी की निर्दोषिता तथा तकी को खूब समझ गये। किन्तु फष्टर के वयान से शैवलिनी की हाजत साफ साफ झलक गई। पहले फष्टर शैवलिनी के बारे में किसी बात का जवाब देने को राजी नहीं था। किन्तु जब रामानन्दस्वामी की कड़ी नज़र उसकी आँखों पर पड़ी तब उसके हृदय पर मानों विजली के अपूर्व सञ्चार प्रकाशित हो उठा। बेचारी भेंर की नाई साहेब ने तब सब बातें स्वीकार कर लीं। शैवलिनी ने उसकी छाया तक को नहीं छूआ था यह उसने मुक्तकण्ठ से स्वीकार किया। अब उस विषय में संशय करने का कुछ भी कारण नहीं रहा।

एकाएक नवाब के खीमे में गोले बारूद की वर्षा होने लगी। अङ्गरेजों ने उस शिविर पर आक्रमण किया था। कुछ हथियार वन्द सिपाही बाहर आये साथ साथ चन्द्रशेखर, शैवलिनी, फष्टर तथा रामानन्द स्वामी बाहर आये।
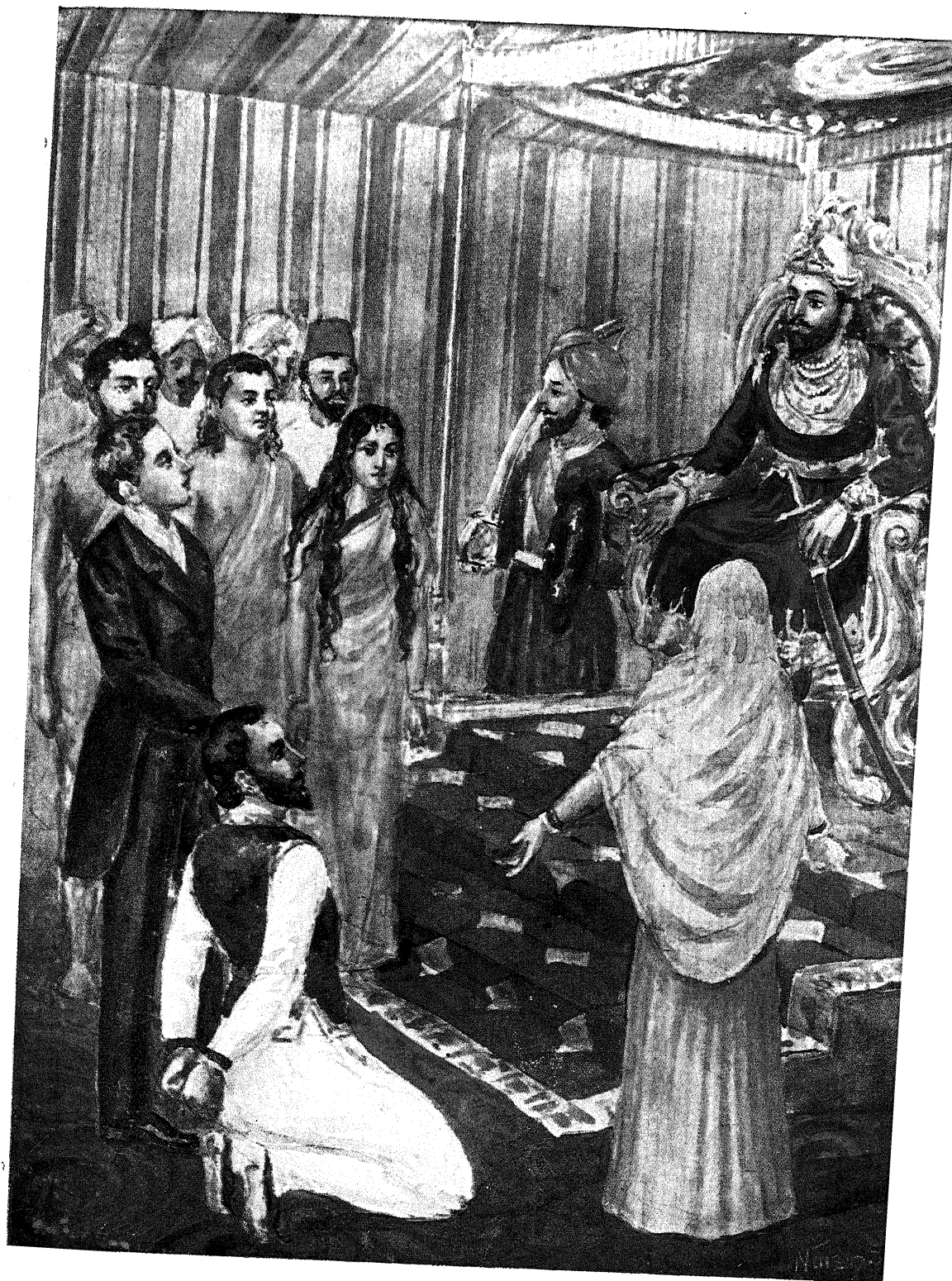
तकी का प्रायश्चित्त ।

तकी का प्रायश्चित्त।

घर में केवल नवाब व बन्दी तकीखाँ रहे। तोप के गोले आकर शब्द करते हुए खीमे के भीतर आग की वर्षा करने लगे। नवाब अब और न ठहर सके। उठ खड़े हुए। बाद अपनी तलवार को निकाल कर तकी की छाती में चुभा कर उसका काम तमाम कर डाला। अभागे तकी की देह प्राण रहित अवस्था में वहीं पड़ी रही। उसकी छाती के खौलते हुए लोहू से स्नान होकर दलनी के अपमान तथा मृत्यु का प्रायश्चित्त होगया।

यह कौन ?

यह कौन ?

बाहर आकर रामानन्द स्वामी तथा चन्द्रशेखर, शैवलिनी को निरापद स्थान लेजाने को व्याकुल हुए। बहुत सैनिक भाग रहे थे। वे सब जिस तरफ जा रहे थे स्वामी जी भी उधर ही चले। रास्ते में घोड़े की पीठ पर सवार असंख्य लाठियल के अगुंआ होकर युद्धस्थल में यह कौन जा रहा है? उनलोगोंने पहचान लिया कि यह प्रताप हैं। चन्द्रशेखर भी प्रताप से मिलने के लिये अत्यन्त व्याकुल हो उठे थे। किन्तु स्वामी जी ने उन्हे शैवलिनी के साथ घर लौट ने की आज्ञा देकर स्वयं प्रताप को खोजने के लिये प्रतिज्ञा की। चन्द्रशेखर को मज़बूरन गुरु की आज्ञा माननी पड़ी। तब स्वामी जी युद्धक्षेत्र की ओर चले।

लड़ाई लगभग शेष हो चुकी थी। चारों तरफ लोग भाग रहे थे। धूआँ, आग, तथा मृतदेहों के कारण रणभूमि श्मशान हो रही थी। भूत, प्रेतों का ताण्डव नृत्य वहाँ हहाँ हो रहा था। स्वामी जी ने भागते हुए कुछ सिपाहियों से पूछकर ज्ञात किया कि उस दिन की लड़ाई में केवल प्रतापहीने वीरत्व दिखाया था। साथ ही उन्होंने रणभूमि ही में सुरधाम सिधारा। स्वामी जी ने मुर्दों के ढेर से बड़े परिश्रम से प्रताप की मृतदेह खोज निकाली। आखिर को बहुत से अङ्गरेज सैनिकों में से अधमरे प्रताप की देह निकली।
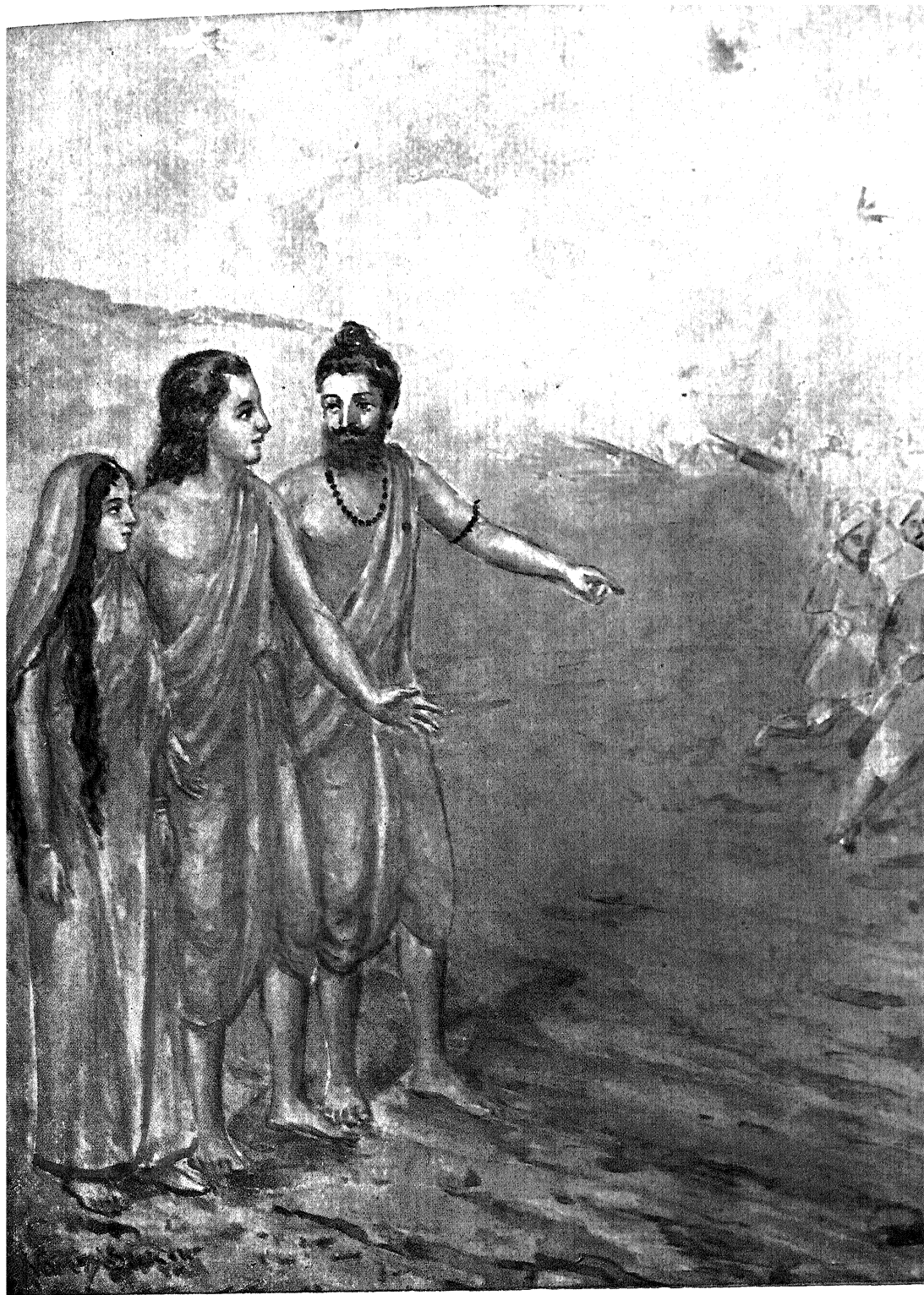
फिर भेंट।

फिर भेंट।

प्रताप बोले "चलिये, आपलोगोंको निश्चिन्त स्थान में लेजाने के लिये ही मैं आया हूँ। हमलोगों के बीच में आजाइये।" रास्ते ही में प्रताप ने चन्द्रशेखर से दरबार की सब बातें सुन लीं। शैवलिनी पापरहित सावित हो चुकी थी यह भी उन्होने सुना। किन्तु उसका उन्माद तब तक भी नहीं छूटा यह सुन कर दुःखित हुए। शैवलिनी ने चूंकि उनकी आँखों में आँसू देखा अतः हाथ के इशारे से उन्हें अलग बुला कर चुपचाप बोले "आज से मैं चंगी होगई हूं। किन्तु यह बात गुप्त ही रखना। तुमसे एक बात मांगती हूं। स्वामी के यहाँ पहले किये हुए पाप को प्रकाश रूप से स्वीकार कर उन की प्रेमभागिनी होना चाहती हूं।" प्रताप ने आज्ञा देकर आँसू भरी हुई आँखों में कहा "मैं आशीष देताहूं। अब तुम सुखी होओगी।" शैवलिनी ने कहा "उसकी आशा अब मुझे न रही। तुम्हारे रहते अब मुझे सुख नहीं है। इस जनम में फिर मुझ से मिलना नहीं।"

प्रताप अब और न ठहर सके, फिर दुवारे बोल नहीं सके। लौटकर घोड़े पर सवार होकर उसे लड़ाई के मैदान की तरफ घुमाया। पीछे पीछे सेना भी दौड़ती गई।

कर्त्तव्य पथ की ओर ।

कर्त्तव्य पथ की ओर।

प्रताप को युद्धक्षेत्र की तरफ जाते देख कर चन्द्रशेखर ने चिल्लाके पूछा "कहाँ जारहे हो भाई? प्रताप ने कहा "युद्ध में। फष्टर अब तक भी जीवित है।" चन्द्रशेखर ने दौड़कर उनके घोड़े का बागडोर पकड़के कहा "भाई! एक मार्के की बात कहता हूं। जो दुष्ट है भगवान उसे दण्ड देहींगे। हमें, तुम्हें इससे क्या मतलब? फष्टर को मारने का प्रयोजन नहीं है।" प्रताप भक्तिभाव के मारे गद्गद् होकर घोड़े से उतर पड़े और उन्हें प्रणामकर फिर घोड़े पर चढ़ गये और रणभूमि की ओर चले। चन्द्रशेखर बोले "फिर क्यों?" प्रताप इसबार घोड़े को जोर से हाँक कर कुछ मन्द और मधुर मुसकरा कर बोले मुझे प्रयोजन है। बाद उसके तुरत नज़र से बाहर हो निकले। उस मन्द मुसकान को देखकर और उन बातों को सुन कर रामानन्द स्वामी क्षुब्ध होगये।
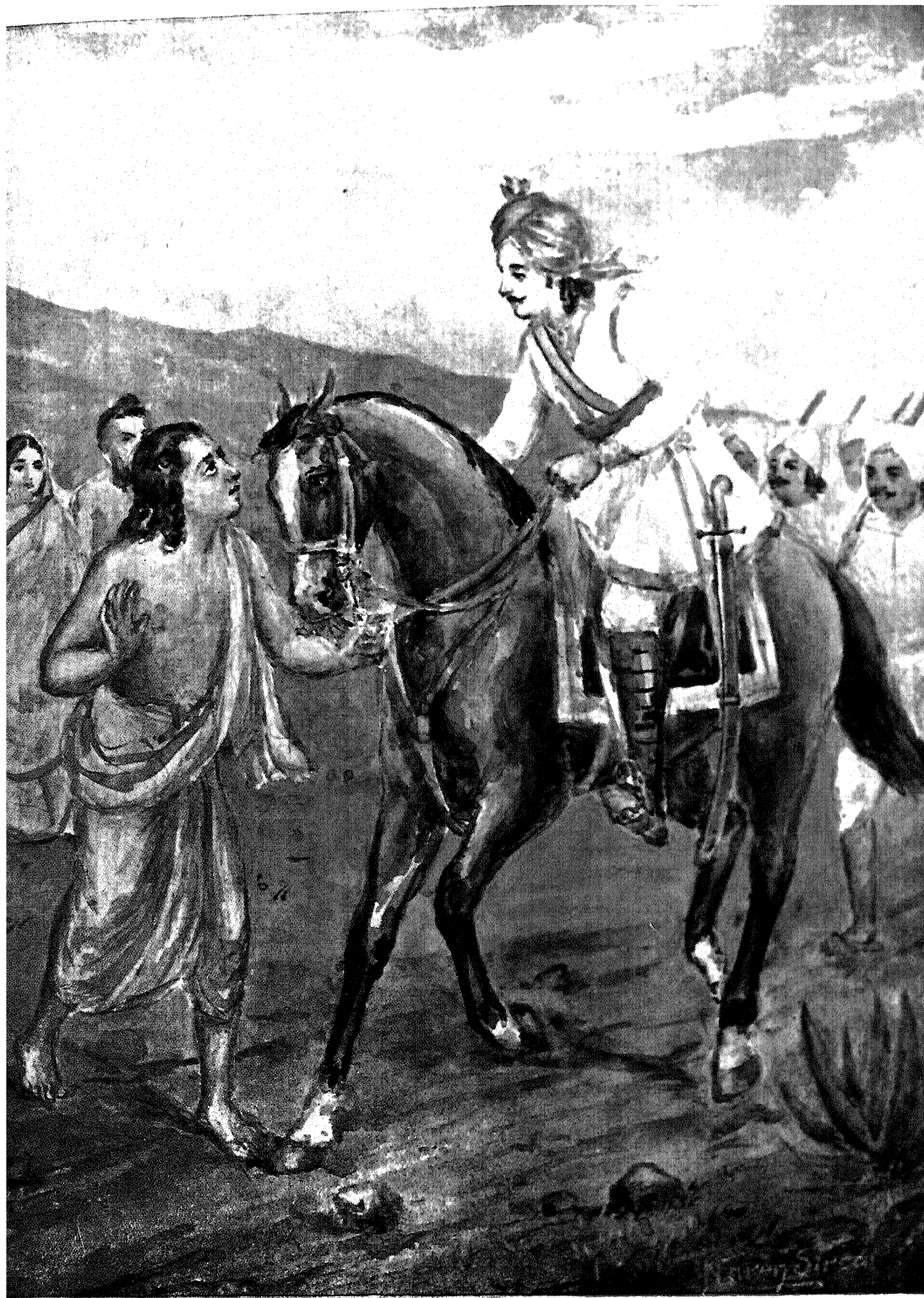
प्रेम का उपहार।

प्रेम का उपहार ।

प्रताप ने रामानन्द स्वामी को देख कर उनकी चरण धूलि की याचना की। उन्होने आशीर्वाद करके कहा "मैंने तुम्हें मना किया था, फिर क्यों इस लड़ाई में आये ?" प्रताप ने शैवलिनी की अन्तिम बात उन्हें कह सुनाई और बोले "मेरे रहते शैवलिनी या चन्द्रशेखर को सुख नहीं है इसी से आयाहूं। उन दोनों से बढ़ के मेरा इस कोइ प्यारा नहीं हैं।" स्वामीजी ने कहा "ब्रह्माण्ड की जय भी तुम्हारी इस इद्रिय जय के बराबर नहीं है। तुम क्या शैवलिनी को प्यार करते रहे ?" प्रताप गरज के बोल उठे "स्वामी जी ! आप तो सन्यासी हैं। आप क्या समझियेगा ? मनुष्य को कभी नहीं ऐसा प्यार कर सकता है। किन्तु पाप दृष्टि से मैंने उसे कभी प्यार नहीं किया। मेरा सच्चा प्रेम जीवन विसर्जन करने की आकांक्षा में था। आप तो सर्वज्ञ और सर्बदर्शी ठहरे। कहिये, मेरे पाप का प्रायश्चित्त हुआ या नहीं ?"

स्वामी जी बोले इन्द्रिय जय रूपी पुण्य रहने पर स्वयं देवता भी तुम्हारे जैसे पुण्यात्मा नहीं हो सकते। परोपकार के पुण्य की बदौलत तुम दधीचि ऋषि से भी महत्व सम्पन्न हो। जन्मान्तर में तुम्हारे ऐसे इन्द्रिय जयी हों।

प्रताप चले गये। रामानन्द स्वामी के नेत्र अश्रुपूर्ण हो गये। इसके सिवा कभी किसीने उनकी आँखों में आँसू नहीं देखा था।